महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५९ **अंक** : २०

दयानन्दाब्द: १९३

विक्रम संवत्: कार्तिक कृष्ण २०७४

कलि संवत्: ५११८

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११८

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.,
त्रिवार्षिक-५८० रु.,
आजीवन (१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर
द्विवार्षिक-९५ पा./१५२ डॉ.,
त्रिवार्षिक-१४० पा./२२५ डॉ.,
आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अक्टूबर द्वितीय २०१७

अनुक्रम

०१. महर्षि दयानन्द और साम्प्रदायिकता	सम्पादकीय	०४
०२. ईश्वर का जन्म-२	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. दीपावली का रामकथा से...	रवीन्द्र अग्निहोत्री	०८
०४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	१२
०५. महर्षि दयानन्द के ईश्वर-जीव.....	पं. उदयवीर शास्त्री	१५
०६. दर्शन विद्या का महत्त्व	स्वामी मुक्तानन्द	१९
०७. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२२
०८. भाषा-प्रौद्योगिकी में हिन्दी की....	डॉ. प्रभु चौधरी	२३
०९. वेद गोष्ठी-२०१७ के लिए निर्धारित विषय		२६
१०. सत्पात्र बन सकूँ	रामनिवास गुणग्राहक	२७
११. ऋषि मेला - २०१७ कार्यक्रम		३१
१२. शङ्का - समाधान - ११	डॉ. वेदपाल	३२
१३. परोपकारिणी सभा की दक्षिण....	राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	३८
१४. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द और साम्प्रदायिकता

तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग महर्षि दयानन्द के विचार और उनकी कार्य-पद्धति को साम्प्रदायिक कहने का दावा करते हैं। यह विषय इतिहास में अनेक बार स्वतन्त्रता से पूर्व और स्वतन्त्रता के बाद से आज तक उठता आया है कि क्या महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज साम्प्रदायिक विचारों का पोषण करते हैं? महात्मा गांधी तक ने ऐसे ही विचार व्यक्त किए थे। यह विचार तथाकथित बुद्धिजीवियों, कम्युनिस्टों, राजनीतिज्ञों के उस मस्तिष्क की उपज है जो खुली आँखों और वैज्ञानिक सोच के आधार पर तार्किकता से इतिहास के खुले हुए तथ्यों की अनदेखी करते हुए एवं स्वार्थ के वशीभूत होकर अपनी इस अवधारणा का निर्माण करते हैं और पोषित करते हैं। फलस्वरूप मीडिया और शिक्षण-जगत् में पाठ्यक्रमों के माध्यम से भी इस दूषित मनोवृत्ति को राजनीतिक हित साधने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता रहा है।

उल्लेखनीय है कि भारत में साम्प्रदायिकता का विकास ब्रिटिश साम्राज्य की सोची समझी चाल थी और 1857 की क्रान्ति के बाद जब उन्होंने देखा कि भारत में हिन्दू और मुस्लिम दोनों ने मिलकर ही ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ने का महनीय प्रयास किया था, तब उन्होंने हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों को अपने पक्ष में करने का कूटनीतिक प्रयास किया तथा इसी को केन्द्र में रखते हुए उन्होंने मुसलमानों के लिए अपने सहयोग और पक्षपात से साम्प्रदायिक हित साधने के द्वार खोल दिए। उन्होंने सैय्यद अहमद खाँ को '**सर**' की उपाधि से अलंकृत कर उन्हें अपने पक्ष में करने का निर्णय किया। ये वही सर सैय्यद अहमद खाँ थे जो कभी कहा करते थे कि भारतीय दुल्हन की दो आँखें हिन्दू और मुस्लिम हैं। लेकिन सर सैय्यद अहमद खाँ को अंग्रेजों ने 200 रुपए की मासिक सहायता प्रदान करते हुए उनके ब्रिटिश राज्य को दिए गए सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने यह भी कहा था कि यदि हिन्दू और मुसलमानों की सेना अलग-अलग 1857 में लड़ी होती तो निश्चय ही हिन्दू-मुसलमानों में भाईचारा उत्पन्न ही न होता। 1871 में सर विलियम हंटर ने '**द मुसलमान्स**' पुस्तक लिखकर साम्प्रदायिकता का इण्डियन आधार तैयार किया। परिणामस्वरूप कलकत्ता में '**मोहम्मडन लिट्रेरी सोसायटी**' की स्थापना की गई और मुसलमानों को हिन्दुओं की अपेक्षा ब्रिटिश राज्य के प्रति सहयोग करने के लिए उकसाया गया और उन्हें प्रेरित किया गया।

इसके विपरीत कांग्रेस के अध्यक्ष बदरुद्दीन तैय्यब जी भारत को एक राष्ट्र मानते हुए हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। सर सैय्यद अहमद खाँ ने उनकी इस विचारधारा का तीव्र विरोध किया, जो 1893 के पायनियर में छपे लेख से स्पष्ट होता है। सर सैय्यद अहमद खाँ मानते थे कि भारत में एक राष्ट्र नहीं, अनेक राष्ट्र हैं और इसीलिए '**यूनाइटेड पेट्रियॉटिक ऐसोसिएशन**' की स्थापना करके उन्होंने राष्ट्रवादी विचारों का भी विरोध किया था। थिओडोर बेक ने सर सैय्यद अहमद के विचारों को सम्पोषित करने के लिए '**मोहम्मडन एंग्लो ऑरिएन्टल डिफेंस एसोसिएशन**' बनाई, क्योंकि थियोडोर बेक '**मोहम्मद एंग्लो ओरिएन्टल कॉलेज**' के प्राचार्य थे। इनका उद्देश्य था कि मुसलमान ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध किसी भी राजनीतिक आन्दोलन का समर्थन नहीं करेगा और ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना और सुरक्षा के लिए तीव्र प्रयास करेगा। स्पष्ट है कि 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने कुछ मुसलमानों को अपने पक्ष में कर साम्प्रदायिकता का बीजारोपण किया। सिक्खों को भी राष्ट्रवादी मुख्यधारा से विलग करने के प्रयास अंग्रेजों ने किए। इसे महर्षि दयानन्द ने अनुभव कर लिया था।

महर्षि दयानन्द 19वीं शताब्दी में साम्प्रदायिकता के विरुद्ध पहले ऐसे योद्धा थे जिन्होंने सभी मत-मतान्तरों का अध्ययन करके 1875 में '**सत्यार्थ-प्रकाश**' में तथाकथित धर्मों की तुलनात्मक दृष्टि से समीक्षा की। रोम्यां रोला ने कहा था कि भारत में अपनी अजेय शक्ति और अविचल कर्मण्यता से प्राण फूंक देने वाले महर्षि दयानन्द एकमात्र योद्धा थे। महर्षि दयानन्द ने दिल्ली दरबार के समय मानव कल्याण के मुख्य सूत्रों को सभी धर्माचार्यों के समक्ष विचार करने हेतु प्रस्तुत किया ताकि सर्वानुमति बन सके। जनसामान्य सत्य धर्म के स्वरूप को स्वीकार कर अपना ही कल्याण नहीं करे अपितु विश्व-कल्याण में अपनी भूमिका का निर्वाह करने में भी समर्थ हो सके। जहाँ सर सैय्यद अहमद खाँ जैसे लोग अंग्रेजपरस्त और मुस्लिम हितों के लिए अंग्रेजी साम्राज्य का समर्थन कर रहे

थे, वहीं महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज ने खुले मन से तार्किक कसौटी पर मानव-धर्म के वैदिक सूत्रों का प्रचार और प्रसार किया और एकता का प्रयास किया। इसलिए यह कहना कि महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के द्वारा पहली बार वैदिक धर्म से इतर धर्मों, मतों, सम्प्रदायों का खण्डन प्रारम्भ किया गया, जिससे साम्प्रदायिकता का विकास हुआ, नितान्त तथ्यहीन और विभिन्न सम्प्रदायों की प्रवृत्तियों को इस आवरण में ढकने का प्रयास था, जिसे बाद में स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गांधी के बीच पत्राचारों में उल्लिखित भी किया जा चुका है। आर्यसमाज के अन्य विद्वानों और चिन्तकों ने भी इस विषय पर लेखनी चलाते हुए महात्मा गांधी और इस प्रकार का विचार रखने वाले अन्य चिन्तकों को समुचित उत्तर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द के अतिरिक्त पं. चमूपति जी ने इस पर विशेषत: लेखनी चलाई।

अभी भी जब साम्प्रदायिकता और उसके इतिहास की चर्चा की जाती है, तो आर्यसमाज को बलात् उसमें खींचकर येन-केन-प्रकारेण दोषी सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है। विपिन चन्द्र, वीर भारत तलवार, राम पुनियानी जैसे इस धारा के लोगों को पूर्वाग्रहग्रस्त कहना ही उचित होगा। आर्यसमाज सत्य पर आधारित संगठन है और तुष्टिकरण या असत्य पर केन्द्रित किसी मेलमिलाप का समर्थन नहीं करता। अन्य-मत-मतान्तरों का विरोध भी उनके असत्य-पक्ष के कारण है। इस संबन्ध में स्मृतिशेष आचार्य धर्मवीर जी का यह कथन अत्यधिक सामयिक हो उठता है, जब वे इस बात को रखते हैं कि **हम किसी भी मत या धर्म में रहें यदि हमारी बुद्धि तटस्थ है और तटस्थ बुद्धि हमारे शास्त्र में मोक्ष की अधिकारिणी होती है तब उसे किसी भी प्रकार का सम्प्रदाय प्रभावित नहीं कर सकता।**

वास्तविकता तो यह है कि शताब्दियों के पश्चात् महर्षि दयानन्द एकमात्र ऐसे दूरदर्शी विचारक थे जिन्होंने हमारे समक्ष मानव कल्याण का विस्तृत कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसमें सम्प्रदाय और मतवादों के दुराग्रह से ऊपर उठकर मानवमात्र के कल्याण का दर्शन है। जो सत्य पर आधारित है।

स्वतन्त्रता से पूर्व कांग्रेस ने स्वामी श्रद्धानन्द के उन विचारों को स्थान नहीं दिया, जिसके कारण बाबा साहब अम्बेडकर को कांग्रेस और गांधीजी की नीतियों का विरोध करने के लिए उतरना पड़ा था और बाद में उन्हें बाध्य होकर बौद्ध धर्म स्वीकार करना पड़ा। इन्हीं नीतियों के कारण भारत के तीन टुकड़े ही नहीं हुए, अपितु आज भी स्वतन्त्रता के बाद पदे-पदे सम्प्रदायवाद की घटनाएँ मुँहबाए खड़ी हो जाती हैं, जो राष्ट्रीय एकता के लिए अत्यन्त घातक हैं।

आज सम्प्रदायवाद के घोर अन्धकार के मध्य महर्षि दयानन्द का चिन्तन, जाति-पाँति, मत और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानव के कल्याण की जो विस्तृत योजना प्रस्तुत करता है, वैसा चिन्तन अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। कार्तिक मास, जिसमें दीपावली का पर्व है और महर्षि दयानन्द का निर्वाण है एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर आधारित वेद-चिन्तन तथा वेद-आधारित मानव कल्याण के विभिन्न प्रकल्पों के चिन्तन-मनन का ऋषि मेला है। इस अवसर पर महर्षि के चिन्तन का केन्द्र वेद का पथ ही वह पुण्यपथ है जो मानव, समाज और भारत राष्ट्र का ही नहीं, अपितु विश्व कल्याण का सीधा और सपाट मार्ग है जिसका अवलम्बन करने से ही हम युद्ध की विभीषिकाओं तथा सम्प्रदायवाद के विध्वंस से मानवता की रक्षा करने में सन्नद्ध हो सकेंगे। देव दयानन्द ने शताब्दियों के अंधकार को चीरकर सत्य की वह महाज्योति प्रज्वलित की, जिसका चिरंतन प्रकाश परमात्मा से उद्भूत वेदज्ञान की ऊर्जा प्राप्त करता है। महर्षि का वेदमार्ग देश-काल-जाति से बाधित न होकर मानवमात्र के लिए है, अत: शाश्वत एवं वरेण्य है। वेद का आदेश है-

''सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा''

इसी व्यापक संस्कृति एवं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए महर्षि, उनके सेनानियों और अनुयायियों ने अनथक श्रम किया और अपने बलिदान दिए। दीपावली अन्यों के लिए प्रकाश और ज्योति का पर्व है, किन्तु हम आर्यों के लिए यह बलिदान का पर्व है। महर्षि के उस महान् बलिदान से उद्भूत प्रकाश ही हमारा पथप्रदर्शक है। अत: हम उन महर्षि का पुण्य स्मरण करते हुए ऋषिमेला, अजमेर में ऋषि-उद्यान का अवलोकन करें तथा नवीन प्रेरणा प्राप्त कर कर्त्तव्यपथ पर अविचल बढ़ने का उपक्रम भी करें-

नक्कारा वेद का बजता है, आये जिसका जी चाहे।
सदाकत वेदे अकदस आजमाये, जिसका जी चाहे।।
(पं. लेखराम)

- दिनेश

ईश्वर का जन्म-२

प्रवचनकर्त्ता- आचार्य (डॉ.) धर्मवीर

आचार्य जी एक दार्शनिक थे-यह एक सर्वविदित तथ्य है, इसी कारण उनकी लेखनी और वाणी दोनों ही किसी भी विषय को तीर की भाँति बेध देती थी। इसी दार्शनिकता के आधार पर वह प्राय: कहते थे कि 'ईश्वर भी जन्म लेता है'। नहीं! नहीं!! आप गलत समझ रहे हैं, वह किसी प्राणी शरीर में जन्म नहीं लेता अपितु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही उसका शरीर है। जैसे जड़ शरीर की गतिविधि को देखकर जीवात्मा के अस्तित्व का निश्चय होता है, वैसे इस ब्रह्माण्ड की गतिविधियों को देखकर इसमें व्याप्त परमेश्वर का भी निश्चय होता है। ईश्वर-सिद्धि के इस नये दार्शनिक सिद्धान्त का पाठक रसास्वादन करें। - **सम्पादक**

क्रमश: .....

और यदि भगवान् भी दो हो जाएं तो ताकत दोगुनी हो जाएगी। लगता है कि ऐसा है। मैंने कहा, एक बात बताओ। एक बाप की सम्पत्ति एक बेटे को ज्यादा मिलेगी कि दो को? एक से दो होते ही सम्पत्ति का विभाजन ही तो होगा न? और विभाजन होगा तो पदार्थ कम होगा या अधिक होगा? भगवान् सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से एक है, मतलब सब पर उसका अकेले का अधिकार है। आप कल्पना करो कि वो दो हो जायें तो आप कोई नई दुनिया बनाकर उसे दे नहीं सकते। जो दुनिया है उसी के दो हिस्से करने पड़ेंगे और यदि दो हिस्से कर दिये तो कम हुए कि ज्यादा हुए? हम सोचते हैं कि बहुत सारे भगवान् होंगे तो बहुत सारा काम हो जायेगा और काम भी आसान हो जायेगा। हम अपने हिसाब से सोचते हैं और उसमें भी गलत सोचते हैं। इस दृष्टि से विचार करते हैं तो जो सबसे बड़ा अन्तर है **'एषो ह देवः प्रदिशोऽनो सर्वा'** वह सब दिशाओं, उपदिशाओं में व्याप्त है। व्याप्त होने से ऋषि दयानन्द इसका अर्थ करते हैं कि वह सर्वत्र व्यापक होने से उसे इन्द्रियों की आवश्यकता नहीं पड़ती। जैसे बाहर के काम के लिए इन्द्रियों की आवश्यकता पड़ती है। उससे बाहर के काम के लिए दूसरे साधनों की आवश्यकता पड़ती है। कहीं दूर जाना हो तो और दूसरे साधन की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन जब आप अपनी ओर लौटोगे, तब कौन से साधनों की आवश्यकता पड़ेगी? इसका एक मोटा उदाहरण देखो, आपसे कहें कि चलो भगवान् का ध्यान करो तो कौन से साधन की जरूरत पड़ती है? कोई नया चश्मा लाते हो? या कहीं और कुछ करने के लिए जाते हो? नहीं, आप पहले से उल्टा करते हो। हाथ-पैर तो बाँध लेते हो और आँखें बन्द कर लेते हो। क्यों? देखने का काम नहीं करोगे? करोगे तो, लेकिन बाह्य आँखें तो बाहर देखने के लिये हैं। देखना जिसे चाहते हो वो कहाँ है? अन्दर है। प्रचलित भी बहुत हो गया कि आदमी जब भी भगवान् का नाम लेता है, चाहे मन्दिर में लेता हो, मस्जिद में लेता हो, गुरुद्वारे में लेता हो, कहीं भी लेता हो, भगवान् नाम लेते ही उसकी एक क्रिया होती है, आँखों का बन्द होना। स्वाभाविक रूप से दो क्रियाएँ होती है। हाथ जुड़ते हैं और आँखें बन्द होती हैं। भगवान् बाहर है और आँखें आप बन्द कर रहे हो तो भगवान् भी कहेगा, अच्छा मूर्ख आदमी है मेरे पास आया है और आँख बन्द करता है। फिर लगता है कि ये गलत है। इसलिये कि जन्म-जन्मान्तर की जो मेरी क्रिया है, उसका जो मेरा अनुभव है वो ये कहता है कि भगवान् बाहर नहीं है। नजर अपने आप उस वस्तु पर जाती है, जिसका आप नाम पुकारते हो। मैं छत कहूँगा तो आप ऊपर देखोगे, फर्श में थोड़े ही देखोगे। वैसे ही मेरे पेड़ कहने पर पेड़ की जगह बाहर देखोगे और मैं ईश्वर कहूँगा तो अन्दर देखोगे। क्योंकि उसका देखना अन्दर ही सम्भव है, अन्दर ही मिल सकता है, अन्दर ही है। यह एक स्वाभाविक परिस्थिति है। परमेश्वर के अस्तित्व में व्यापकता होने से इन्द्रियों की जरूरत नहीं पड़ती, इसलिये वो सारे काम बिना इन्द्रियों के कर सकता है। इस बात को इस मन्त्र ने बहुत अच्छी तरह से समझाया है। जब पहेलियों को आप बुझाते हो तो लगता उल्टा है पर

होता तो सीधा ही है। वैसे ही जब आप वेद को वेद की भाषा से देखोगे, वेद की शैली से देखोगे तो आपको कुछ भी नया और कुछ भी अटपटा नहीं लगेगा। इसलिये जब कभी आपको ऐसा लगता है तो यह समझना कि ऐसा है नहीं, ये समझने का अन्तर है। **'एषो ह देवः प्रदिशोऽनुऽसर्वा पूर्वो ह जातः सऽउ गर्भे अन्तः'** वो पहले ही पैदा हुआ है और गर्भ में भी है। **'सऽएव जातः स जनिष्यमाणः'** वो पैदा हो भी चुका, हो भी रहा है। आपकी दृष्टि से तो ये सारी भाषा ही गड़बड़ है। लेकिन ये भाषा बिल्कुल ठीक है। क्योंकि ऐसी सब वस्तुओं, सब क्रियाओं में वो विद्यमान है। होती हुई क्रियाओं में हो रहा है, हो चुकी क्रियाओं में हो चुका है। जो अन्दर है वो उसमें है, जो बाहर है वो उसमें भी है। अन्त में कहता है **'प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः'** कहता है कि तू घूम जा, जिधर तू घूम जायेगा, उधर ही उसका मुँह है। मेरा मुँह तो सब जगह नहीं होगा न। मैं उल्टा बैठ जाऊँ तो आप कहेंगे, ये पण्डित तो पागल है, पीठ करके बैठा है। लेकिन आप उसको कैसे कहोगे कि वो आपकी तरफ पीठ करके बैठा है? वेद कहता है वह तो सर्वतोमुख है, तू मिल जहाँ से मिलना है। तुझे मुँह उसकी तरफ करना है, ना कि उसको तेरी तरफ करना है। उसका मुँह तो सब जगह है। वह तो सर्वतोमुख है। अब जब सर्वतोमुख कहते हो तो आपके मन में एक ही बात आयेगी, ब्रह्मा जी की तरह कुछ होगा, चार मुँह वाला होगा। क्यों? हमारी बुद्धि उससे आगे जाती नहीं। तो हमें लगता है अरे! ये तो भौतिक हो जायेगा। ये तो अवतार हो जायेगा। ये जन्म लेनेवाला हो जायेगा। कुछ नहीं होगा। वहाँ केवल इतना कहना है कि वह सर्वव्यापक है उसके सब सामर्थ्य सब जगह विद्यमान हैं।

जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठन रूप यज्ञ कर्म्म करने वाला मनुष्य है वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा संतोष करने वाला होता है इससे ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२७

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

एक आहुति
अपने आचार्य के लिए.....

ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की तन, मन, धन से सेवा करने वाले, उसे अपनी मातृवत् समझने वाले और यहाँ तक कि अपना जीवन समर्पित कर देने वाले डॉ. धर्मवीर आज अपना समस्त भार आर्य जनता अर्थात् अपने उत्तराधिकारियों पर छोड़ गये हैं। उन्होंने ऋषि के स्वप्नों को अपना कर्त्तव्य समझकर सभा को गगनचुंबी ऊँचाइयों तक पहुँचाया। अनेक नये प्रकल्प चलाये यथा-वैदिक गुरुकुल, गौशाला, आश्रम, अतिथियों के ठहरने व खान-पान की निःशुल्क व्यवस्था आदि। उन्होंने जो-जो कार्य छेड़े उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में कभी न्यूनता न आने दी। परोपकारिणी सभा ऐसे पुत्र को प्राप्त कर गौरव का अनुभव करती है और बिछुड़कर शोकग्रस्त होने का भी। उनके द्वारा शुरु किये कार्य कभी शिथिल न पड़ें, इस कारण **सभा ने डॉ. धर्मवीर जी की स्मृति में एक करोड़ रु. की स्थिर निधि बनाने का संकल्प लिया है,** जिससे कि धन धर्म के काम आ सके। इसमें सन्देह नहीं कि ये समस्त कार्य आर्य जनता के सहयोग से ही प्रारम्भ हो सके हैं और सहयोग से ही चल भी रहे हैं। इसलिये इसमें भी सन्देह नहीं कि सभा के इस संकल्प को आर्य जनता शीघ्र पूर्णता की ओर पहुँचा देगी और शायद उससे भी कहीं बढ़कर। यज्ञ तो हवि माँगता है। बिना हवि के यज्ञ की कल्पना भी क्या? बस देरी तो सूचित होने की है। हवि बनना तो आर्यों के खून में है, तन से, मन से अथवा धन से।

आप अपना दान चैक, ड्राफ्ट या सभा के खाते में सीधे भी भेज सकते हैं। कृपया, राशि भेजने के पश्चात् सभा में दूरभाष या पत्र द्वारा अवश्य सूचित कर दें।

- मन्त्री

दीपावली का रामकथा से संबन्ध - एक भ्रम

डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री

सामान्यतया यह माना जाता है कि दशहरा और दीपावली का संबन्ध रामकथा से संबन्धित घटनाओं से है। दशहरा आश्विन मास की शुक्ल दशमी को मनाया जाता है। उत्तर भारत में इस अवसर पर रामलीला में श्री रामचन्द्र जी के द्वारा रावण-वध का कार्यक्रम प्रमुखता से आयोजित किया जाता है। इसके लगभग बीस दिन बाद कार्तिक अमावस्या को दीपावली मनाई जाती है। यह प्रसिद्ध है कि इसी दिन श्री राम अपना वनवास पूरा करके सीता और लक्ष्मण सहित अयोध्या वापस आए थे और वहाँ उनका राज्याभिषेक हुआ था। अत: इस दिन अयोध्यावासियों ने दीपक जलाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी। समाज में कुछ लोग ऐसे हैं जो रामकथा को काल्पनिक मानते हैं, उनकी तो बात ही अलग है, पर अनेक लोग इसे ऐतिहासिक मानते हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 'रामकथा: उत्पत्ति और विकास' पर शोधकार्य करके अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित करने वाले डॉ. कामिल बुल्के ने रामकथा को ऐसी ऐतिहासिक घटना माना है, जिसकी प्रस्तुति वाल्मीकि ने (और उनके बाद उनके काव्य से प्रभावित होकर अन्य भी अनेक कवियों ने) अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए की है। आइये, हम भी इसे ऐतिहासिक मानते हुए रामकथा के तथ्यों के आलोक में यह देखें कि दशहरा और दीपावली को रामकथा से जोड़ना कितना तर्कसंगत है।

रामायणकालीन इतिहास हमें आज रामकथा से संबन्धित काव्यग्रन्थों, कतिपय पुराणों, महाभारत, बौद्ध और जैन ग्रन्थों में ही उपलब्ध है, पर इन ग्रन्थों में रामकथा एक ही रूप में नहीं मिलती। इनमें से वाल्मीकि रामायण को रामकथा का सर्वप्रथम एवं प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है, पर यह ग्रन्थ भी अपने मूलरूप में आज सुरक्षित नहीं। आज इसके तीन संस्करण मिलते हैं और उनके कथानक में बहुत अन्तर है। वस्तुत: श्रीराम की यह कथा इतनी लोकप्रिय हुई कि बाद में अनेक कवियों ने इस पर काव्य-रचना की और उसमें अपनी-अपनी रुचि के अनुसार नए-नए प्रसंगों की उद्भावना की। कुछ लोगों ने नई कृति की रचना करने के बजाय प्राचीन ग्रन्थों में ही स्वरुचि के अनुरूप कुछ अंश जोड़ दिए जिन्हें आज विद्वान् लोग प्रक्षिप्त कहते हैं। इन प्रक्षेपों के कारण ही आज रामकथा के अनेक प्रसंगों के अलग-अलग रूप मिलते हैं, जैसे, सीता को कहीं जनक की पुत्री कहा है, तो कहीं रावण की या दशरथ की पुत्री बताया है, कहीं उन्हें भूमिजा, पद्मजा, रक्तजा आदि कहा है।

आज वाल्मीकि रामायण में सात कांड (बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकांड, सुन्दरकांड, युद्धकांड और उत्तरकांड) मिलते हैं, पर विद्वानों का कहना है कि मूल वाल्मीकि रामायण का प्रारम्भ अयोध्या कांड से और समापन युद्ध कांड पर मानना चाहिए। बालकांड और उत्तरकांड तो पूरे के पूरे प्रक्षिप्त हैं जो अन्य लोगों द्वारा बाद में जोड़े गए हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कांडों में भी अनेक प्रसंग प्रक्षिप्त हैं, जैसे, अवतारवाद से संबन्धित सामग्री, स्वर्ण मृग का वृत्तान्त, हनुमान द्वारा लंका-दहन, संजीवनी बूटी की तलाश में हनुमान की हिमालय-यात्रा, रावण-वध के बाद सीता की अग्नि परीक्षा, पुष्पक में श्री राम की अयोध्या को वापसी आदि। इन्हें प्रक्षिप्त सिद्ध करने के लिए विद्वान् लोग अनेक तर्क देते हैं। उदाहरण के लिए उत्तरकांड को देखें। कथानक की दृष्टि से इस कांड की सर्वाधिक प्रमुख घटना सीता-त्याग की है, पर महाभारत में या विष्णु पुराण, हरिवंश पुराण, वायु पुराण, नृसिंह पुराण जैसे रामकथा से संबन्धित प्राचीन पुराणों में इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। अध्यात्म रामायण और कंबन की तमिल रामायण में भी इसकी कोई चर्चा नहीं। गुणभद्र कृत उत्तर पुराण में तो लंका से अयोध्या लौटने के बाद सीता के आठ पुत्र उत्पन्न होने की चर्चा की गई है। वहाँ सीता-त्याग की ओर कोई संकेत तक नहीं। महाराज भोज के समय में 'चम्पू रामायण' लिखी गई, जिसे वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त रूप माना जाता है। इसमें भी केवल युद्धकांड तक की कथा का वर्णन है। इटली के एक विद्वान् गोरेशियो (Gaspare Gorresio-1808-1891)

ने वाल्मीकि रामायण का इतालवी भाषा में अनुवाद (१८४७) किया था। यह यूरोप में रामायण का सबसे पहला अनुवाद था। उसने भी उत्तरकांड को प्रक्षिप्त माना और अपने अनुवाद में इसे सम्मिलित नहीं किया। उत्तरकांड को प्रक्षिप्त मानने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि कथा की फलश्रुति (कथा सुनने का लाभ, उसकी महिमा) कथा के अन्त में की जाती है और वाल्मीकि ने रामकथा की फलश्रुति युद्धकाण्ड के अन्त में कह दी है। फिर भी अगर कोई फलश्रुति के बाद कथा को आगे बढ़ा रहा है तो यह प्रक्षिप्त होने का ही प्रमाण है।

जहाँ तक दशहरा और दीपावली का संबन्ध है, रामायण के अयोध्याकांड के तृतीय सर्ग के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम राम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना निश्चित हुआ था और उसी अवसर पर उन्हें १४ वर्ष के लिए वनवास हुआ, अर्थात् वे चैत्र मास में वन के लिए गए। इस दृष्टि से देखें तो १४ वर्ष की अवधि चैत्र मास में ही पूरी होनी चाहिए, न कि आश्विन या कार्तिक में। जहाँ तक रावणवध का संबन्ध है, वह हमारी रामलीला का एक प्रमुख कार्य होता है। रामलीला का आयोजन गोस्वामी तुलसीदास की पहल पर शुरु हुआ था। उन्होंने स्वयं अपने 'रामचरितमानस' में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि रावणवध चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को हुआ था। उनके शब्द हैं–

चैत्र शुक्ल चौदस जब आयी।
मरयो दशानन जग दुखदायी।।

पर हम तुलसी के सन्देश (चैत्र शुक्ल चतुर्दशी) को भूलकर रावण वध आश्विन मास की शुक्ल दशमी (विजयदशमी) को करने लगे हैं।

विभिन्न विद्वानों ने रावण वध का समय यद्यपि अलग-अलग बताया है, फिर भी वह फाल्गुन से लेकर वैशाख के बीच ही आता है। जैसे, पं. महादेवप्रसाद त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक 'भक्ति विलास' में फाल्गुन सुदी एकादशी, पं. हरिशंकर दीक्षित ने 'त्योहार पद्धति' में चैत्र कृष्ण अमावस्या, पं. हरिमंगल मिश्र एम.ए. ने अपनी कृति 'प्राचीन भारत' के परिशिष्ट में वैशाख कृष्ण चतुर्दशी बताई है। रावण वध के बाद उसकी अन्त्येष्टि और फिर विभीषण के राज्यारोहण में अधिक समय नहीं लगा। उधर राम भरत के लिए भी चिन्तित थे। वनवास अवधि पूरी होते ही उन्हें अयोध्या अवश्य पहुँचना था, अन्यथा भरत के प्राण त्यागने की आशंका थी। इसी कारण राम ने कुछ दिन लंका में रुकने और विभीषण का आतिथ्य ग्रहण करने के आग्रह को भी स्वीकार नहीं किया। वे अयोध्या वापस आते समय जब भरद्वाज आश्रम में पहुँचे, तब चैत्र शुक्ल पंचमी का दिन था। यह भी ध्यान देने योग्य है कि रावण वध के बाद अयोध्या तक की यात्रा में कार्तिक तक का समय नहीं लग सकता, क्योंकि यह यात्रा प्रचलित मान्यता के अनुसार पुष्पक विमान से की गई, पैदल नहीं।

अयोध्या में राम के स्वागत के लिए जो आयोजन किया गया, उसका वर्णन युद्ध कांड के सर्ग १२७ में किया गया है, पर उसमें 'दीपक' शब्द का एक बार भी उल्लेख नहीं हुआ है। वैसे भी राम आदि दिन के समय अयोध्या पहुँचे, अत: दिन में दीपक जलाने की कोई आवश्यकता भी नहीं थी। रामायण में ऐसा भी कोई उल्लेख नहीं कि राम के स्वागत के सन्दर्भ में रात को भी कोई आयोजन किया गया हो।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कार्तिक अमावस्या को मनाई जाने वाली दीपावली का रामकथा से कोई संबन्ध नहीं है। वस्तुत: दीपावली (और होली) निश्चित रूप से इस कृषि प्रधान देश के बहुत प्राचीन त्योहार हैं, दशरथ पुत्र राम से भी पहले के त्योहार हैं, जिनका संबन्ध ऋतु-परिवर्तन और नई फसल तैयार होने से है। हमारे यहाँ दो मुख्य फसलें होती हैं जिन्हें आज हम रबी और खरीफ कहते हैं। रबी की फसल होली पर और खरीफ की फसल दीपावली पर तैयार होती है। प्राचीन काल में इन पर्वों पर विशाल यज्ञ (हवन) करने की परम्परा थी, जिसे 'नवसस्येष्टि यज्ञ' (नई फसल आने के उपलक्ष्य में किया गया यज्ञ) कहते थे। दीपावली वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर मनाई जाती है। हम जानते ही हैं कि वर्षा ऋतु में तमाम चीजें सड़-गल जाती हैं और वातावरण को विषाक्त बना देती हैं। नाना प्रकार के कीड़े-मकोड़े भी बरसात में उत्पन्न हो जाते हैं, जिनसे विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। अत: हमारे पूर्वजों ने यह परम्परा डाली कि इस अवसर पर घरों की सफाई-पुताई करके विशेष हवन किए जाएँ ताकि वायुमंडल

शुद्ध हो जाए।

कालान्तर में इस परम्परा को हम भूल गए और दीपावली पर लक्ष्मी-पूजन की प्रथा विकसित हो गई। जरा विचार कीजिए कि अगर यह त्योहार भगवान् राम से संबन्धित होता तो इस अवसर पर उनकी पूजा होनी चाहिए थी, न कि लक्ष्मी की? जहाँ तक लक्ष्मी की बात है, वह कृषक के लिए ही नहीं, हम सबके लिए भी अच्छी फसल के रूप में मानों साक्षात् रूप धारण कर लेती है। अत: लक्ष्मी-पूजन भी इसी बात का प्रमाण है कि यह कृषि से संबन्धित त्योहार है। आधुनिक युग में ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट किया कि यदि वैज्ञानिक ढंग से विधिपूर्वक हवन किया जाए तो उससे वायुमंडल शुद्ध होता है और विभिन्न रोगों से संबन्धित कीटाणुओं का नाश होता है। अनेक वैज्ञानिकों ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है। अत: अनेक लोग अब दीपावली पर हवन करने लगे हैं, पर जिन तक यह सन्देश अभी नही पहुंचा है वे लक्ष्मी की पूजा करके ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। हमारे समाज की विडम्बना देखिए कि कुछ लोग इस अवसर पर मन को अशुद्ध करने वाले कर्म 'जुआ' खेलने को 'शुभकर्म' मानने लगे हैं। ये लोग दुहाई देते हैं ब्रह्म पुराण की, जिसमें दीपावली के अगले दिन का नाम ही 'द्यूत (जुआ) प्रतिपदा' रखकर इस तिथि पर प्रभातकाल में जुआ खेलना अनिवार्य बताया गया है। हमने इसे तो पुराण की बात मानकर अपना लिया, पर जो काम पुराण में भी नहीं बताया गया था, हम वह भी करने लगे और वह है-ध्वनि और वायु को प्रदूषित करने वाली आतिशबाजी, जिसे अब लोगों ने अपनी सम्पन्नता का प्रतीक मान लिया है, इसलिए जितने अधिक संपन्न, उतनी अधिक आतिशबाजी। बात तो थी दीपावली पर वातावरण को शुद्ध करने की, पर हम तो उसे और अशुद्ध करने लगे हैं।

आप क्या सोचते हैं? अब जब दीपावली आएगी, तब उसका सही सन्दर्भ याद रख पाएंगे? घर की सफाई करने के बाद वातावरण को शुद्ध करने के लिए गाय के घी और सुगन्धित सामग्री से विशेष हवन करेंगे या.....।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अन्न-संग्रह (दानदाता)

१. श्रीमती रेशमी देवी व श्री नरेन्द्र यादव, अजमेर, २. आर्यसमाज, रथखाना, बीकानेर ३. नगर आर्यसमाज, बीकानेर ४. डॉ. नरेन्द्र माहेश्वरी, नसीराबाद, अजमेर ५. श्री रामकरण, श्री शिवदत्त, मुकेश कुमार माहेश्वरी व श्री जयप्रकाश राठी, कड़ैल, अजमेर ६. श्री सतीश अग्रवाल, अजमेर ७. सेवा भारती, किशनगढ़, ८. श्री सत्यपाल गुप्ता, किशनगढ़, ९. श्रीमती सुधा गुप्ता, ब्यावर १०. श्री चवन्नीलाल, नसीराबाद ११. श्री कैलाश, भट्टयाणी, अजमेर १२. श्री कुन्दनमल, भट्टयाणी, नसीराबाद १३. श्री सांवरलाल मूंदड़ा, नसीराबाद १४. श्री कल्याणमल किशनगोपाल, नसीराबाद १५. श्री शिवम् राठी, अजमेर १६. श्री बृजेश व राकेश सोनी, पीसांगन, अजमेर १७. श्री दुर्गाराम गंगवार, जेठाना, अजमेर १८. श्री पन्नालाल गेना, जेठाना,अजमेर १९. श्री रामसुख, जेठाना, अजमेर २०. श्री हरिनिवास ईनाणी, बिड़क्व्यावास, अजमेर २१. श्री सत्यनारायण, बिड़क्व्यावास, अजमेर २२. श्री दशरथ आँजना, मरजीवी, चित्तौड़ २३. श्री गणपत पटेल, मरजीवी, चित्तौड़ २४. श्री विक्रम पटेल, मरजीवी, चित्तौड़ २५. श्री गणपत आर्य, मरजीवी, चित्तौड़ २६. श्री जीवन आंजना, मरजीवी, चित्तौड़ २७. श्री कमल, मरजीवी, चित्तौड़ २८. श्री रामलाल, मरजीवी, चित्तौड़ २९. श्री उदयलाल, बसेड़ा, छोटी सादड़ी ३०. श्री हीरालाल, बसेड़ा, छोटी सादड़ी ३१. श्री राजमल आंजना, बसेड़ा, छोटी सादड़ी ३२. रॉयल एकेडमी स्कूल, खेड़ी, आर्यनगर ३३. श्री हरनारायण व्यास, मलावदा, छोटी सादड़ी ३४. श्री विष्णु पारीक, मलावदा ३५. श्री बावरु लाल, मलावदा, छोटी सादड़ी ३६. श्री केसूराम, मलावदा, छोटी सादड़ी ३७. श्री रतनलाल मलावदा, छोटी सादड़ी ३८. श्री शिवराम, मलावदा, छोटी सादड़ी ३९. श्री दयानन्द वर्मा व श्रीमती सुशीला वर्मा ४०. श्री राजेश आनन्द, अजमेर ४१. श्री रामावतार मालू, किशनगढ़ ४२. श्री दिनेश चन्द मालू व श्रीमती सरोज मालू, किशनगढ़ ४३. वैद्य श्री शान्त कुमार शर्मा, अजमेर ४४. श्री रामचन्द्र आँजना, मरजीवी, चित्तौड़।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३४ वाँ ऋषि बलिदान समारोह
दिनांक २७, २८, २९ अक्टूबर २०१७, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है, जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३४वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ- २५ अक्टूबर से प्रारम्भ होने वाले 'यजुर्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २९ अक्टूबर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा **श्री सत्यानन्द वेदवागीश** होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान अजमेर की यज्ञशाला में सम्पन्न होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे शीघ्र सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २७, २८, २९ अक्टूबर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २७ अक्टूबर को परीक्षा एवं २८ अक्टूबर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय शीघ्र आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३४वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान् एवं विशिष्ट अतिथि- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान सार्वदेशिक सभा, आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सोमपाल शास्त्री- पूर्व केन्द्रीय कृषि मन्त्री, श्री सज्जनसिंह कोठारी-लोकायुक्त जयपुर, श्री विजयसिंह भाटी-जोधपुर, श्री विनय आर्य-मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री इन्द्रजित् देव-यमुनानगर, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री- रायबरेली, डॉ. रघुवीर वेदालंकार-दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, डॉ. वेदपाल-बड़ौत, आचार्या सूर्या देवी- शिवगंज, डॉ. विक्रम कुमार 'विवेकी'-चण्डीगढ़, श्री तपेन्द्र वेदालंकार-(रि. आई.ए.एस.) जयपुर, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि-झज्जर, श्री कन्हैयालाल आर्य-गुरुग्राम, डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी'-दिल्ली, डॉ. रामचन्द्र-कुरुक्षेत्र, श्री दीनदयाल गुप्त-कोलकाता, श्री शत्रुघ्न आर्य-राँची, डॉ. जगदेव-रोहतक, डॉ. रमेशचन्द्र 'जीवन'-चण्डीगढ़, डॉ. वीरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. ज्ञानप्रकाश-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. रूपकिशोर-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. सोमदेव 'शतांशु'-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, डॉ. विनय विद्यालंकार-हल्द्वानी, डॉ. कृष्णपाल सिंह-जयपुर, श्री रामपाल- प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरि., श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, डॉ. उदयन-तेलंगाना, श्री प्रकाश आर्य-महू, श्री सत्यपाल पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	डॉ. सुरेन्द्र कुमार	ओम मुनि
संरक्षक	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

तो फिर ईश्वर को क्या कहोगे?- दिल्ली से दयानन्द मठ दीनानगर के एक स्नातक श्री रामचन्द्र जी शास्त्री ने चलभाष पर कुछ प्रश्नों के उत्तर जानने चाहे। उनका पहला प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण था। इस समय इस प्रश्न पर तड़प-झड़प में कुछ लिखने का इस विनीत का विचार बन रहा था। रामचन्द्र जी ने तो इस लेखक के मन की बात चितचोर बनकर चुरा ली। आर्यसमाज में भी कई भाई किसी विद्वान्, वक्ता, प्रवक्ता, नेता और संन्यासी को परम आदरणीय या परमपूज्य कहते व लिख देते हैं। रामचन्द्र जी ने प्रश्न उठाया है- क्या किसी व्यक्ति को, महापुरुष को परमपूज्य अथवा परम आदरणीय बताना या कहना वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध नहीं है?

कुछ संस्थायें व पौराणिक मत-पन्थों के लोग अपने नेता, गुरु गद्दी पर आसीन व्यक्ति को **'परमपूज्य'** ही कहते व मानते हैं। वैदिक साहित्य में कहीं भी ईश्वरेतर को 'परमपूज्य' नहीं माना गया। आधुनिक काल में वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द जी के साहित्य में, व्याख्यानों में और आर्यसमाज के सम्पूर्ण सैद्धान्तिक साहित्य में हमारे किसी मूर्धन्य विद्वान्, संन्यासी और साहित्यकार ने कहीं भी किसी महापुरुष को परमपूज्य नहीं लिखा है। पौराणिक वातावरण में किसी का अन्धानुकरण करके किसी को परमपूज्य बताना व मानना ईश्वर का अपमान है।

लाहौर में आर्यसमाज के कुछ लोगों ने महर्षि जी को 'आर्यसमाज का परम सहायक' घोषित करना चाहा। ऋषिवर ने तत्काल इस रोग की जड़ काटते हुये कहा, तो फिर ईश्वर को क्या मानोगे? क्या जानोगे? क्या कहोगे? एकेश्वरवादी आर्यों को इस पाखण्ड का सर्वत्र खण्डन करना चाहिये। ऐसे तो एक-एक करके सब पौराणिक अन्धविश्वास आर्यसमाज में घुस जायेंगे। हमने मुनिवर गुरुदत्त, महात्मा आर्यमुनि, स्वामी नित्यानन्द जी से लेकर स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तक कभी भी किसी को परमपूज्य न माना और न कहा। ऋषि मिशन से प्रमाण देकर शास्त्री जी का समाधान कर दिया। वह तृप्त हो गये।

दक्षिण भारत में एक समय श्री पं. नरेन्द्र जी जब हमारे मुकटविहीन सम्राट् थे तो हम उन्हें **'आर्य युवक हृदय सम्राट'** मानकर अपनी श्रद्धा व्यक्त किया करते थे, परन्तु 'परमपूज्य' जैसे शब्द का प्रयोग करके हम नास्तिकता की चौखट तक कभी नहीं पहुँचे।

स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास शताब्दी स्मारक- परोपकारी कई मास से स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास शताब्दी का प्रचार कर रहा है। अन्य-अन्य संगठन ऐसे महत्त्वपूर्ण पर्वों पर शताब्दी स्मारक खड़े करते हैं। न जाने आर्यसमाज को प्रमादरूपी सर्प ने यह क्या डस लिया है कि जलसे, जुलूसों, स्कूलों, संस्थाओं और महासम्मेलनों के रसिया आर्यों ने कहीं भी इस शताब्दी का कोई स्मारक खड़ा करने का उद्यम नहीं किया। यह लज्जाजनक नीति-रीति और व्यवहार है। हम फिर भी निराश नहीं। हरियाणा में महर्षि जी ने केवल रेवाड़ी क्षेत्र में दिल खोलकर समय देकर वेदामृत बरसाया था। ऋषि-चरणों को चूमने वाली उस धरती के एक नन्हे ग्राम देवनगर (चामधेड़ा) के उत्सव पर वहाँ के आर्यों ने स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय की स्थापना करके आर्यसमाज की लाज रख ली है। हमें हर्ष है कि देवनगर के आर्यवीरों ने आर्यसमाज को प्रमादरूपी कलङ्क का टीका लगने से बचा लिया है।

इस पुस्तकालय को तुच्छ अथवा रस्मपूर्ति न माना जाये, इसमें ऐसे-ऐसे दस्तावेज़ हैं जो अन्यत्र किसी भी पुस्तकालय में नहीं हैं। इसी अवसर पर हम भी प्रेमपूर्वक इस शताब्दी स्मारक को २०-२५ और ऐसे दस्तावेज़ भेंट करेंगे, जो किसी भी पुस्तकालय में नहीं मिलेंगे।

आर्य मात्र के लिये एक शुभ समाचार- जब हम दक्षिण की यात्रा पर थे तो दो-तीन बार बठिण्डा से हमारे कृपालु ऋषिभक्त श्री जितेन्द्रकुमार जी गुप्त ने चलभाष पर पूछा, ''क्या कोई नई सामग्री, नये स्रोत कहीं से मिले? एक नया ठोस ग्रन्थ और प्रकाशित करें।'' उन्हें हर बार कहा, कुछ तो कहीं से मिलेगा। खाली हाथ नहीं लौटूँगा। आप मिलेंगे तो जान जायेंगे।

दक्षिण के आर्यवीरों को एक वर्ष पूर्व यह वचन दिया

था कि स्वामी श्रद्धानन्द जी पर एक खोजपूर्ण बृहद् ग्रन्थ लिखकर फिर आपकी आज्ञा का पालन किया जायेगा। हैदराबाद से ट्रेन चलने तक वह अपनी माँग को पूरा करने के लिये प्रेरणा देते रहे। अपनी उत्कट इच्छा की पूर्ति के लिये परमोत्साही आर्यवीर राहुल से भी दबाव डलवाया।

आर्य जाति के एक-एक सेवक को यह आनन्ददायक समाचार पाकर गौरव होगा कि दक्षिण से लौटने तक हमारे हाथ कुछ ऐसे स्रोत लग गये जिनकी जानकारी सम्भव है पं. नरेन्द्र जी को कुछ हो तो हो। सारे आर्यजगत् में और कोई नहीं जानता कि जो-जो आर्यसमाज विषयक गौरवपूर्ण तथ्य (हमारे हाथ लगे) स्रोतों में हमने पाये हैं। दस दिन तक 'दक्षिण में आर्यसमाजोदय तथा हैदराबाद का मुक्ति संग्राम' विषय पर सर्वथा दुर्लभ स्रोतों के प्रमाणों से परिपूर्ण पुस्तक का लेखन आरम्भ हो जायेगा।

इतिहास बोल रहा है और बोलेगा- लेखक की अपनी विषय की पहली और अनूठी पुस्तक 'इतिहास बोल पड़ा' इस लेख के छपने तक छप चुकी होगी। ऋषि मेला पर इसका विमोचन होगा। इसकी सामग्री, इसमें आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द विषयक महत्त्वपूर्ण जानकारियों का पहली बार ही अनावरण हो रहा है। किसी भी इतिहासकार को, ऋषि जीवन के किसी भी लेखक को जिन घटनाओं का आज तक ज्ञान नहीं था, वे इस पुस्तक में मिलेंगे। श्री राहुल आर्य तथा उनके युवा आर्यमित्रों के अथक पुरुषार्थ व सहयोग के लिये 'धन्यवाद' का शब्द बहुत छोटा है। हमारे मनोभाव असीम हैं। आर्य-जाति तथा इतिहासकारों का कृतज्ञ हृदय हमारे परिश्रम व सेवा का मूल्याङ्कन करेगा।

हम यहीं रुकने वाले नहीं हैं। कभी कारागार में लिखे गये अपने ही एक गीत की यह पंक्ति हम गुनगुना लेते हैं-

हम रुकना झुकना क्या जानें

जो परियोजनायें चल रही हैं उनके साथ-साथ ऋषि जीवन पर हमारी अगली पुस्तक, 'इतिहास बोल रहा है' का लेखन भी आरम्भ हो जायेगा।

इसे आप 'इतिहास बोल पड़ा' का दूसरा भाग समझिये। यह स्वर्गीय डॉ. धर्मवीर जी को समर्पित होगी। इसमें क्या होगा?

राहुल जी ने कहा, कुछ नया काम बतायें। क्या चाहिये? उन्हें ऋषि जी के जीवनकाल के एक अंग्रेजी पत्र के कुछ अंक खोजने का कार्य सौंपा। इनके मिलने से महर्षि के जीवन संघर्ष तथा यात्राओं की तिथियों की सुनिश्चित जानकारी हो जायेगी। इससे कई गुत्थियाँ सुलझ जायेंगी। अपनी तो यह चाहना है कि जीवन की साँझ में ऋषि-जीवन का यह कार्य पूरा हो जाये तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। इससे मन को बड़ा सन्तोष होगा।

यह तो सोचा नहीं था कि राहुल जी हनुमान बनकर 'स्रोतों का पर्वत' ही उठा लायेंगे। आर्यो! आपको आर्यसमाज के सपूत पर अभिमान होगा कि उसे ऋषि जीवन का कार्य सौंपा था, वह महात्मा नारायण स्वामीजी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, ला. लाजपतराय जी, प्राणवीर पं. लेखराम जी पर ऐसे-ऐसे स्रोत खोज लाया है, जिनकी हमने कल्पना तक नहीं की थी।

राहुल के पिता जी दक्षिण की यात्रा पर हमारे लिये भोजन आदि का बहुत सामान लेकर आये। आपने भावभरित हृदय से कहा, ''हमने अपना इकलौता पुत्र ऋषि मिशन के लिये-समाज के लिये आपको सौंप दिया। आर्यसमाज के लिये वह जो कुछ कर रहा है-उससे हमारा जन्म और जीवन सफल हो रहा है। हमारी घर-गृहस्थी, कामधन्धा प्रभुकृपा से ठीक चल रहा है।'' आज के सत्ता व सम्पत्ति-पूजा के युग में कोई पिता इतनी ऊँची सोच रखता हो तो यह देश व समाज के लिये गौरव का विषय है। आज समाजों की सम्पत्तियाँ हड़पने वालों की कमी नहीं। निष्काम सेवकों का और विश्वस्त सहयोगियों का सर्वत्र दुष्काल है। ऐसी स्थिति में राहुल जी और उस जैसे कर्मवीर युवकों की टोली को जीवन के इस मोड़ पर पाकर लेखक अपने प्रारब्ध पर क्यों न इतराए? कौन जानता था कि सन् १९००ई. में अंग्रेजी साम्राज्य ने आर्यसमाज से भयभीत होकर इंग्लैण्ड में यह समुद्री तार भेजा था, ''Revolit in India feared'' भारत में भीषण विद्रोह की आशङ्का है। सरकार ने आर्यसमाज को उभरते ही कुचलने का मन बना लिया था।

यह सरकार का गुप्त दस्तावेज राहुल ने ही खोज निकाला। जितना कार्य राहुल जी सौंपा जाता है, उसका एक चौथाई भी हो जाये तो यह बहुत बड़ी बात है, परन्तु यहाँ तो हर बार यह देखा गया है कि उसे जितना कार्य

सौंपा जाता है, वह उससे कहीं अधिक करके हमें चकित कर देता है। न जाने माता-पिता ने उसे क्या जन्मघुट्टी पिला कर बड़ा किया है। 'इतिहास बोल पड़ा' तो आर्य जनता के हाथों में पहुंचने ही वाला है। अब आबाल वृद्ध 'इतिहास बोल रहा है' की प्रतीक्षा करें।

डॉ. सुमित्रा जी की ऊहा और श्रम- श्री पं. सुधाकर जी की पौत्री डॉ. सुमित्रा जी तीस वर्ष तक देहरादून रही हैं। अंग्रेजी, कन्नड़ आदि के अतिरिक्त हिन्दी पर भी उनका पूरा-पूरा अधिकार है। बैंगलोर पहुँचते ही डॉ. राधाकृष्णन् जी ने यह जानकारी दी कि आपकी पुस्तक 'कर्नाटक आर्यसमाज का इतिहास', जो कई वर्ष से छिपा पड़ा था, अब उसका कन्नड़ अनुवाद शीघ्र छपेगा। यह भी बताया कि डॉ. सुमित्रा जी ने इस पर गहन खोज करके बहुत कार्य किया है। डॉ. राधाकृष्णन् जी की बात हम पूरी-पूरी समझ न पाये कि पाण्डुलिपि पर डॉ. सुमित्रा जी ने क्या कार्य किया है।

जब श्रद्धेय पं. सुधाकर जी से मिलने गये तो डॉ. सुमित्रा ने अंग्रेजी में टाइप की हुई एक फाइल हमारे आगे रख दी। एक दृष्टि डाली तो हमें यह देखकर प्रसन्नता हुई कि हमने कर्नाटक आर्यसमाज के इतिहास में जो कई प्रेरक प्रसंग व घटनायें दी थीं-डॉ. सुमित्रा जी की यह पुस्तिका उसकी पुष्टि करती है। हमने चौंककर उनसे पूछा, ''आपको यह जानकारी किस स्रोत से, कहाँ से प्राप्त हुई?''

आपने कहा, यह सारा कार्य आप ही की पुस्तक पर किया है। अब कुछ ध्यान से देखा तो पता चला कि आपने पुस्तक में वर्णित एक-एक व्यक्ति के बारे में कन्नड़ साहित्य, कर्नाटक विषयक अंग्रेजी पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं से पूरक जानकारी प्राप्त करके यह निष्कर्ष निकाला कि **जो कुछ हमने लिखा है वह सब प्रामाणिक है**। आपने हमारी पुस्तक में वर्णित तत्कालीन सब कन्नड़ ऋषि-भक्तों व वेद-भक्तों के फोटो भी खोज निकाले। उनकी ऊहा और श्रम का क्या कहना। पुस्तकों का ढेर हमारे सामने रख दिया। सबने यह माना कि डॉ. सुमित्रा ने तो इस पाण्डुलिपि पर कार्य क्या किया, पीएच.डी. का शोध-प्रबन्ध तैयार कर दिया। आर्यसमाज कर्नाटक क्या भारतभर का आर्यसमाज आपके अथक श्रम से धन्य-धन्य हो गया है।

आर्य युवकों का विश्वव्यापी तालमेल- कभी महाशय कृष्ण जी ने लिखा था आर्यसमाज की चक्की चलती तो धीरे-धीरे है, परन्तु पीसती बारीक है। विघटन व पदलोलुपता के इस युग में पं. लेखराम वैदिक मिशन के सिद्धान्तनिष्ठ आर्यवीरों ने महाशय जी के इस कथन को सत्य कर दिखाया है। इस समय युवकों के नाम पर आर्यसमाज में कई संगठन हैं। सबके फोटो छपते रहते हैं। कभी लेखराम वैदिक मिशन का फोटो किसी ने कहीं किसी पत्र में छपा देखा? हमने तो प्रेरणा देकर ऊँची योग्यता के इन युवकों को पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय और पं. नरेन्द्र के मार्ग पर चला दिया। भारत सरकार द्वारा निज़ाम उस्मान को महिमामण्डित करने वाली पुस्तक का आर्यसमाज को पता तक न चला। हमने इसकी पोल खोलने व देशद्रोहपूर्ण कुकृत्यों को उजागर करके कुछ लिखने की ठानी तो ये युवक हमारे साथ खड़े हो गये।

अभी दिल्ली से एक युवा आर्य मिशनरी ने श्रद्धाराम फिल्लौरी पर कई महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछे। हमने कहा 'इतिहास की साक्षी' पुस्तक में उत्तर पढ़ लें। उन्होंने उसमें वर्णित दस्तावेजों के प्रमाणों के विषय में पूछा, यह कहाँ से मिले? अमेरिका में कार्यरत महाराष्ट्र का आर्यवीर हमारे आर्यवीरों की टोली से जुड़कर ऋषि मिशन की सेवा तथा उपलब्धियों का नया इतिहास रच रहा है। समय आयेगा, सब जान जायेंगे। फोटो मार्का संगठन ऐसा एक भी व्यक्ति मैदान में न उतार सके। हम सत्ता व सम्पत्ति की ऐंठ वालों के आश्रित नहीं। हम प्रभु-आश्रित हैं। हमारा आधार तो पवित्र वेदवाणी है।

राज ठाकरे ने ठीक ही कहा- श्री राज ठाकरे का यह कथन पूरा सत्य है कि जब तक कांग्रेस राहुल गांधी के हाथ में है मोदी को चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं, ठीक इसी प्रकार हिन्दुओं में जाति-पाँति व जातिवाद को संरक्षण देने वाले संगठन व दल जब तक हैं, इस्लाम व ईसाई मत के विस्तार को कोई कानून नहीं रोक सकता। लव जिहाद को रोकने व घर वापसी के विषय में लीडरों व बाबा के भाषण हमने पढ़-सुन लिये। जब तक जाति-पांति मिटाने का अभियान नहीं छेड़ा जाता, कुछ भी हाथ लगने वाला नहीं। मूर्तिपूजा तथा जातिवाद मिटाने के लिये सिर-धड़ की बाजी लगाने की आर्यसमाज में क्या हिम्मत है? अग्निवेश के होते इस्लाम के विस्तार की क्या चिन्ता?

ऐतिहासिक कलम....

महर्षि दयानन्द के ईश्वर-जीव-प्रकृति-विषयक विचार एवं महर्षि-दर्शन

आचार्य उदयवीर शास्त्री

महर्षि दयानन्द के दार्शनिक विचारों के क्षेत्र का मुख्य आधार महर्षि-प्रतिपादित 'त्रैतवाद' है। यह वाद मूलभूत एवं अनादि-अनन्त तत्त्वों की मान्यता पर आधारित है। प्राचीन दार्शनिक आचार्यों ने द्वैत-अद्वैत वादों का विस्तृत उपपादन किया है। द्वैतवाद के अन्तर्गत त्रैतवाद समाविष्ट है। इन सभी विचारों के लिये वेद तथा अन्य वैदिक वाङ्मय में प्रमाणभूत वाक्यों को खोज लिया गया है। उनको आधार बनाकर विभिन्न दर्शन-शास्त्रों में अभिमत एवं अपेक्षित वाद का तथा उसके अङ्गभूत विषयों का ऊहापोहपूर्वक विस्तृत उपपादन किया गया है। ये वाद आपातत: एक-दूसरे के विरुद्ध प्रतीत होते हुए भी वस्तुत: विरोधी न होकर परस्पर अर्थ-तत्त्व के पूरक ही हैं।

द्वैतवाद- दार्शनिक क्षेत्र में इस वाद का उद्घाटन सर्वप्रथम परमर्षि कपिल ने किया। मूल रूप में चेतन और जड़ दो प्रकार के तत्त्वों को स्वीकार करना इस वाद का आधार है। समस्त विश्व इन दो प्रकारों में विभाजित है, तत्त्व का अन्य कोई तीसरा प्रकार नहीं है। इनमें जड़तत्त्व परिणामी है, जो समय-समय पर परिवर्तित होता रहता है, चेतन तत्त्व ऐसा नहीं, वह अपरिणामी है, अपरिवर्तनशील है। वैदिक साहित्य में इसके प्रमाण उपलब्ध हैं।

इस दर्शन में चेतन तत्त्व को दो रूपों में स्वीकार किया गया है- एक समस्त विश्व का अधिष्ठाता नियन्ता व प्रेरक है। दूसरे प्रकार का चेतन तत्त्व वह है, जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म देहों से लेकर स्थूल देहों तक प्रत्येक में पृथक्-पृथक् रहता है। जो चेतन एक समय किसी एक देह में है, वह उसी समय अन्य देह में नहीं रह सकता। समस्त विश्व का एकमात्र अधिष्ठाता होने से पहला चेतन संख्या में एक मात्र तत्त्व है। दूसरे चेतन प्रत्येक देह में अलग-अलग रहने से अनेक हैं। इनके चैतन्य स्वरूप में कोई अन्तर नहीं होता। इनमें पहला परमात्मा अथवा ईश्वर कहा जाता है, जबकि दूसरे को जीवात्मा कहते हैं। इस प्रकार द्वैतवाद के अन्तर्गत ही त्रैतवाद समाविष्ट है।

अद्वैतवाद- इस वाद की मान्यताओं के अनुसार चेतन और जड़ तत्त्वों को मूलरूप में एक-दूसरे से पृथक् नहीं माना जाता। मूलभूत तत्त्व एक ही है, उसी में से दूसरा अवसर पाकर अभिव्यक्त हो जाता है। वेद के कतिपय सन्दर्भों में इस वाद के पोषक संकेतों को उभार लेने का दावा किया जाता है। अन्य वैदिक-साहित्य ब्राह्मण, उपनिषद् आदि में से अनेक सन्दर्भ इसके पोषक ढूँढ लिये गये हैं, जो सर्वविदित हैं।

इस वाद को दो शाखाओं में विभक्त समझना चाहिए। एक शाखा मूल में केवल चेतन तत्त्व को मानकर उसी का दृश्यमान जड़ तत्त्व के रूप में प्रतीत होना स्वीकार करती है। दूसरी शाखा वह है, जिसमें समस्त दृश्यमान जड़-चेतन जगत् का मूल केवल जड़ तत्त्व ही विकसित व परिणत होता हुआ कालान्तर में चेतन रूप से भासित हो जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि इस वाद के विचारक मूल में एक मात्र तत्त्व को ही स्वीकार करते हैं। उसका नाम एक ने चेतन और दूसरे ने जड़ रखा है। यदि चेतन जड़ के रूप में प्रतीत अथवा परिणत हो सकता है, तो जड़ का भी चेतन रूप में भासित होना अथवा परिणत होना असम्भव नहीं है।

इनमें पहला वाद वैदिक तथा दूसरा अवैदिक कहा जाता है। इसको यथाक्रम आस्तिक-नास्तिक नाम से भी पुकारते हैं, परन्तु इस नाम का प्रयोग दोनों ने अपने विचार के अनुसार एक-दूसरे के वर्ग के लिए किया है। इस प्रकार अपने विचार से दोनों आस्तिक, तथा दूसरे के विचार से दोनों नास्तिक हैं। नाम कुछ भी हों, यहाँ केवल यह प्रस्तुत करना अभिप्रेत है कि अद्वैतवाद के चिन्तकों ने समस्त विश्व के मूल में एकमात्र तत्त्व को स्वीकार किया है।

ध्यानपूर्वक विचारा जाये तो ऐसा ज्ञात होता है कि द्वैतवादी आचार्यों ने समस्त विश्व के मूल में प्रकाश-अन्धकार के समान परस्परविरोधी-स्वरूप जिन चेतन व जड़ पदार्थों को स्वीकारा है, अद्वैत विचारकों में से एक ने

उन दोनों मूल पदार्थों के मध्य में से केवल चेतन को संभाल लिया और दूसरे ने जड़ को। उसी के आधार पर समस्त विश्व का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इनमें चेतनवादी वे आचार्य हैं, जिनके विचारों का दृढ़ पोषण आचार्य गौड़पाद व शङ्कर आदि ने किया है। यह वाद केवल बौद्धिकरूप में अथवा 'कथनी' के रूप में चालू है। जड़वादी आचार्य बृहस्पति व चार्वाक कहे जाते हैं। यह वाद बार्हस्पत्य दर्शन, चार्वाक दर्शन अथवा लोकायत दर्शन के नाम से प्रसिद्ध है। किसी पूर्वकाल में प्रबल विरोध के कारण दर्शन के रूप में यह वाद भारतीय परम्परा में नष्ट प्राय हो चुका है, परन्तु आचरण रूप से समस्त विश्व में व्याप्त है, जो इसके 'लोकायत' नाम की सार्थकता को अभिव्यक्त करता है।

अन्ततः ये परस्पर-विरोधी नहीं- द्वैत-अद्वैतवाद आपाततः परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं, परन्तु अद्वैतवादी आचार्य अपने मान्य मूल तत्त्व के प्रतियोगी दूसरे तत्त्व की उपेक्षा नहीं कर सके। विश्व में स्पष्ट दो प्रकार के पदार्थों का अनुभव होता है। चेतनवादी ने जड़ स्वरूप का तथा जड़वादी ने चेतनस्वरूप का-स्थिति से बाध्य होकर अनिवार्य उपपादन किया है। इसका तात्पर्य है- चेतन और जड़ दोनों सत्ताएँ अनुपेक्षणीय हैं एवं वास्तविक हैं, एक ने चेतन को महत्त्व दिया, दूसरे ने जड़ को। ऐसा करने के कारण जो भी रहे हों, पर इससे दोनों प्रकार की सत्ताओं को स्वीकारने का मार्ग बाधारहित होकर प्रशस्त हो जाता है। फलतः इन वादों में परस्पर-विरोधी भावना को न देखकर, दोनों की स्थिति दृढ़ होने से, इनमें एक-दूसरे का पूरक होने की खोज करना अधिक उपयुक्त होगा।

त्रैतवाद- दार्शनिक क्षितिज की इन परिस्थितियों को गहराई से भाँपकर महर्षि दयानन्द ने समस्त दर्शनों के सार एवं वेदप्रतिपाद्य जगन्मूलतत्त्वों की परख पर इस वाद का उद्दीपन किया। त्रैतवाद में तीन मूलतत्त्वों का उपपादन किया जाता है-ईश्वर, जीव और प्रकृति। इनमें पहले दो अनादि, अनन्त, अपरिणामी चेतन तत्त्व हैं। तीसरा प्रकृति-तत्त्व जड़ है तथा अनादि, अनन्त एवं नित्य माना जाता है। यह समस्त भौतिक विश्व का उपादान कारण होने से कार्यरूप में परिणत होता है तथा कार्य जब निमित्तान्तरों से प्रताड़ित होकर अपने कार्यरूप को छोड़ देता है, तब वे तत्त्व कालान्तर में पुनः अपने मूलरूप अथवा कारणरूप से अवस्थित हो जाते हैं। तात्पर्य है कि उस अवस्था में उनका कार्यरूप परिणाम नहीं रहता। इसी परिस्थिति के अनुसार इसको प्रवाह से नित्य अथवा अनादि-अनन्त माना जाता है। इस प्रकार मूलरूप में तीन तत्त्वों की स्थिति स्वीकार कर समस्त विश्व की व्याख्या सर्वांश में पूर्ण हो जाती है। महर्षि दयानन्द के दार्शनिक सिद्धान्तों का मूलभूत आधार यही है।

इन तत्त्वों के विषय में ऋषि के द्वारा दिये गये विस्तृत विवरणों का सार उनकी लघु रचनाओं से संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत है।

ईश्वर- जिसके ब्रह्म, परमात्मा आदि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षण युक्त है, उसी को परमेश्वर मानता हूँ।

[स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश, १]

ईश्वर- जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो अद्वितीय, सर्वशक्तिमान्, निराकार, सर्वत्रव्यापक, अनादि और अनन्त आदि सत्य गुणवाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है, जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सर्व जीवों को पाप-पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुँचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।

[आर्योद्देश्यरत्नमाला-१]

ईश्वर-सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

[आर्यसमाज के नियम, सं. ३]

जीव- जो इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख और ज्ञान आदि गुणयुक्त अल्पज्ञ नित्य है, उसी को जीव मानता हूँ।

[स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश, ४]

जीव का स्वरूप- जो चेतन अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान गुण वाला तथा नित्य है, वह जीव कहाता है।

[आर्योद्देश्यरत्नमाला, ७७]

जीव और ईश्वर का सम्बन्ध- दर्शन की कतिपय शाखाओं में जीवात्मा की सत्ता को स्वतन्त्र नहीं माना गया। चाहे उसे ईश्वर अथवा ब्रह्म का रूप माना जाये या भूतमात्र की एक विकसित दशा, दोनों अवस्थाओं में वह परापेक्षित अस्तित्व रह जाता है। ऋषि ने जीवात्मा को नित्य स्वतन्त्र सत्ता मानकर ईश्वर के साथ उसके सम्बन्ध को निम्नरूप में स्वीकार किया है-

''जीव और ईश्वर, स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य-व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न हैं, अर्थात् जैसे आकाश से मूर्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था, न है, न होगा और कभी एक था, न है, न होगा। इसी प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्य-व्यापक, उपास्य-उपासक और पिता-पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त मानता हूँ।''

[स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश, ५]

अनादि व प्रवाह से अनादि- अनादि पदार्थ तीन हैं, एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण (=उपादान कारण), इन्हीं को नित्य भी कहते हैं।

[स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश, ६]

अनादि पदार्थ- ईश्वर, जीव और प्रकृति जो सब जगत् का कारण है, ये तीन स्वरूप से अनादि हैं।

[आर्योद्देश्यरत्नमाला, ५२]

प्रवाह से अनादि- जो संयोग से द्रव्य, गुण, कर्म उत्पन्न होते हैं, वे वियोग के पश्चात् नहीं रहते, परन्तु जिससे प्रथम संयोग होता है, वह सामर्थ्य उनमें अनादि है, और उससे पुनरपि संयोग होगा तथा वियोग भी। इन तीनों को प्रवाह से अनादि मानता हूँ।

[स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश, ७]

प्रवाह से अनादि पदार्थ- जो कार्य जगत्, जीव के कर्म और जो इनका संयोग-वियोग है, ये तीन परम्परा से अनादि हैं।

[आर्योद्देश्यरत्नमाला, ५३]

ऋषि मेला २०१७ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २७, २८, २९ अक्टूबर शुक्र, शनि, रविवार २०१७ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्यजगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉल लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उसी क्रम से स्टॉल का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉल की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधाः- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोटः**- किसी प्रकार का आपत्तिजनक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। **परोपकारी पत्रिका कार्यालय से निरन्तर भेजी जाती है, फिर भी जिन लोगों के पास पत्रिका का कोई अंक प्राप्त ना हुआ हो तो कृपया पत्र या दूरभाष द्वारा हमें सूचित करें, ताकि हम वह अंक पुनः भेज सकें, साथ ही अपने डाकघर में इसकी जाँच आदि भी करें।**

धनराशि भेजने हेतु सूचना

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित सभा है एवं उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिय कृत-संकल्प है। सभा द्वारा ऋषि के स्वनानुरूप गुरुकुल, संन्यास एवं वानप्रस्थाश्रम, ध्यान शिविर, वैदिक साहित्य का प्रकाशन, देश में प्रचार, परोपकारी पत्रिका के माध्यम से जन-जागरण, भव्य अतिथिशाला, भोजनशाला आदि अनेक प्रकल्पों का संचालन हो रहा है। ये सभी कार्य आर्यजनों के सात्विक दान से ही होते हैं। अतः दानी महानुभावों से निवेदन है कि वेद, ईश्वर, दयानन्द के इस कार्य में अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें।

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं, वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

दर्शन विद्या का महत्त्व

स्वामी मुक्तानन्द परिव्राजक

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक विभिन्न गुणों से परिपूर्ण इस दृश्य जगत् में सर्वाधिक विचारशील प्राणी मनुष्य के मानस पटल में कुछ शाश्वत प्रश्न उत्पन्न होते हैं- मैं कौन हूँ (शरीर मात्र तो मैं नहीं हूँ)? कहाँ से आया हूँ (जन्म से पहले कहाँ था)? मृत्यु के बाद कहाँ जाऊँगा? मेरा क्या होगा? यह संसार क्या है? यह संसार स्वत: निर्मित है या कोई निर्माणकर्त्ता है? सभी दु:खों से छूटकर सदा आनन्द में रहने का क्या उपाय है? इन मनुष्य-पशु-पक्षी आदि प्राणियों का जन्म इनकी इच्छानुकूल होता है अथवा अचानक (बिना कारण) या किसी व्यवस्था से होता है? इत्यादि प्रश्न विवेकी मनुष्य के मानस व्यापार में अवश्य स्थान पाते हैं, अन्य में नहीं। इन प्रश्नों का उत्तर हमारे प्राचीन ऋषियों ने पवित्र अन्त:करण में समाधि-प्रज्ञा में प्राप्त किया। सभी ऋषि वेद को (ईश्वरीय ज्ञान को) स्वत: व परमप्रमाण मानते हैं। हमारे प्राचीन ऋषियों को आप्त कहते हैं। आप्त का अर्थ है-१. जिसने समाधि में धर्मों का (विशेष ज्ञान का) प्रत्यक्ष किया, २. जैसे निर्भ्रान्त जाना, प्रत्यक्ष किया वैसे ही सत्यवादी, सत्यमानी, सत्यकारी होते हैं, ३. दूसरों को अपने प्रत्यक्ष ज्ञान को बताने की इच्छा से प्रेरित उपदेष्टा आप्त कहलाते हैं।

ऋषियों के शुद्ध अन्त:करण में प्राप्त विचार=विशेष ज्ञान जो जीवन व जगत् के सम्बन्ध में शाश्वत सत्य हैं, उसे दर्शन विद्या कहते हैं। शब्द की व्युत्पत्ति की दृष्टि से ''दृश्यते अनेन इति दर्शनम्'' अर्थ होगा, जिसके द्वारा देखा जाता है वह है दर्शन। मात्र आंखों या ज्ञानेन्द्रियों से देखना मानें तो पशु भी दर्शन करते हैं, परन्तु जिन तत्त्वों को हम ज्ञानेन्द्रियों से जान नहीं सकते हैं, जैसे इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, आत्मा, परमात्मा, पुनर्जन्म, कर्मफल, मुक्ति आदि का दर्शन=ज्ञान, ये जिस साधन से होता है उसका नाम दर्शन विद्या है। इस दर्शन विद्या से हमारा अज्ञान व अज्ञान-जनित दु:ख दूर होते हैं, जीवन की समस्याओं का समाधान मिलता है। इस दर्शन विद्या से ही हम दुर्लभ मानव जीवन को सफल बनाने में समर्थ होते हैं।

दर्शन विद्या का मूल वेद है। सत्य विद्याओं का मूल वेद है। मनुष्य के लिए आवश्यक सभी प्रकार के ज्ञान वेद में विद्यमान हैं। उनमें से एक-एक निश्चित विषय में क्रमबद्ध रूप में उस विषय का विस्तृत वर्णन ऋषियों ने किया है। विद्या वेद से हैं, काल के आधार पर उस-उस विद्या के प्रवक्ता बदलते रहते हैं। जैसे आज जो विद्यालय में गणित आदि की पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, उन पुस्तकों के लेखक गणित आदि विद्या के उत्पादक, नये बनाने वाले नहीं है। गणित विद्या तो उस लेखक के जन्म से पहले भी थी, लेखक ने विषय को व्यस्थित किया। कैसे विषय अधिक अच्छा समझ में आ सके, उसके लिए अपनी शब्दावली आदि से पुस्तकों का संकलन करता है। वैसे ही भारतीय षड् आस्तिक दर्शन वेदाधारित हैं, प्रणेता ऋषि हैं, विद्या वेद की है। इन षड्दर्शनों का संक्षिप्त परिचय यहाँ लिखते हैं।

१. महर्षि पतञ्जलि प्रणीत **योग दर्शन** का प्रतिपाद्य विषय- चित्त में स्थित सभी ५ प्रकार के क्लेश ही समस्त दु:खों का कारण हैं। योगशास्त्र के चार व्यूह १. हेय (त्याज्य=दु:ख) २. हेय हेतु (दु:ख का कारण) ३. हान (दु:ख से पूरी तरह छूट जाना) ४. हानोपाय (पूर्ण दु:खनिवृत्ति का उपाय)। (जैसे चिकित्सा शास्त्र के चार विभाग होते हैं -१. रोग (क्या है) २. रोग का कारण ३. आरोग्य और ४. आरोग्य के उपाय।) सभी क्लेशों को नष्ट करने के अभ्यास-वैराग्य द्वारा चित्तवृत्ति निरोध, ईश्वर प्रणिधान, ऋतम्भरा-प्रज्ञादि प्रथम समाधि पाद में बताया है। मध्यम स्तर के लिए और प्रारम्भिक व्यक्ति के लिए योग के आठ अंगों का उपदेश द्वितीय साधन पाद में निर्दिष्ट है। योग साधना, समाधि से प्राप्त होने वाले ऐश्वर्यों का वर्णन तृतीय विभूति पाद में है। जन्म-जन्मान्तर के क्लेशों को नष्ट करते हुए योगी की ऊँची स्थिति, जिससे गुजरते मोक्ष तक पहुँचते हैं, उसका उल्लेख चौथे कैवल्य पाद में है। योग विद्या के बिना कोई मनुष्य कभी भी पूर्ण सुखी, शान्त, सन्तुष्ट, निर्भीक नहीं हो सकता है। योग दर्शन पर महर्षि व्यास का प्राचीन व प्रामाणिक भाष्य है।

२. महर्षि कपिल प्रणीत **सांख्य-दर्शन** योगशास्त्र का

पूरक है। मूल प्रकृति और उससे निर्मित अन्य कार्य पदार्थ कुल संख्या में २४ हैं और पुरुष (जीवात्मा व परमात्मा) २५वाँ तत्त्व है। सांख्य का सत्कार्यवाद सिद्धान्त है अर्थात् अभाव से कुछ उत्पन्न नहीं होता है। तत्त्वों की उत्पत्ति व प्रलय क्रम, सभी के कार्यों का वर्णन है। प्रकृति और पुरुष के संयोग (बन्धन) का कारण अविवेक है तथा दोनो का शुद्ध, यथार्थ स्वरूप पृथक्-पृथक् जानना विवेक है। विवेक प्राप्ति के उपाय विस्तार से अनेक दृष्टान्तों के माध्यम ये भी बताये। आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक-तीनों प्रकार के दु:ख से पूरी तरह छूट जाना मनुष्य का अन्तिम प्रयोजन सांख्य बताता है।

३. महर्षि कणाद प्रणीत **वैशेषिक दर्शन** में धर्म का यथार्थ स्वरूप (जिसे सांसारिक उन्नति तथा नि:श्रेयस् की सिद्धि) बताया गया है। साधर्म्य व वैधर्म्य ज्ञान की विशेष पद्धति इसमें है। वैशेषिक दर्शन में छ: पदार्थ द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय के साधर्म्य तथा वैधर्म्य से उत्पन्न तत्त्वज्ञान से नि:श्रेयस की प्राप्ति मानी है। इस दर्शन के "**कारणाभावात् कार्याभाव:**" (१.२.१)सूत्र से समस्त अन्धविश्वास, जादू-टोना, मिथ्या चमत्कार आदि समाप्त हो जाते हैं। इसमें विशेष कारण प्रक्रिया, आत्मास्तित्व की परीक्षा, दृष्ट-अदृष्ट कर्म, कर्मफल, बुद्धिपूर्वक योग्य को दान देना-लेना आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषय प्रतिपादित हैं, जो हमारे दैनिक व्यावहारिक जीवन के साथ जुड़े हुए हैं।

४. महर्षि गौतम द्वारा प्रणीत **न्याय-दर्शन** में प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन आदि १६ पदार्थों के तत्त्वज्ञान से नि:श्रेयस की प्राप्ति कही गयी है। सत्य-असत्य के निर्णय के लिए, बौद्धिक विकास, सूक्ष्म विवेचन की क्षमता के लिए यह शास्त्र अत्यन्त आवश्यक है। "**प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्याय:**" इस परिभाषा द्वारा पक्ष-प्रतिपक्ष में जय-पराजय की विद्या स्पष्ट है। यह आन्वीक्षिकी विद्या अनुमान प्रमाण और पञ्चावयव पर स्थित है। इस शास्त्र में प्रथम १६ पदार्थों की संज्ञा, द्वितीय सब की परिभाषा (किसे कहते हैं?) और तृतीय उनकी परीक्षा अतिविस्तार से की गई है। हमारी कसौटी (प्रमाण-तराजू) ही ठीक न हो तो उससे जो मापेंगे वह उचित कभी नहीं होगा। आत्मा से लेकर अपवर्ग (मोक्ष) तक १२ प्रमेयों की परीक्षा हम सभी को अवश्य जाननी चाहिए। इस दर्शन में मिथ्याज्ञान को दूर करने के लिए न्याय=सत्य=तत्त्वज्ञान की आवश्यकता को बताया गया है। मिथ्या ज्ञान हटने से राग-द्वेष-मोह हटते हैं, उससे अशुभ कर्म छूटते, तब जन्म व दु:ख से दूर होना अर्थात् मुक्ति सम्भव है। कर्मफल, पुनर्जन्म, सृष्टि-उत्पत्ति, ईश्वर, वेदादि शास्त्रों की प्रामाणिकता के बारे में अत्यन्त उपयोगी व विस्तृत विवेचन किया गया है। इस दर्शन में महर्षि वात्स्यायन द्वारा रचित प्राचीन व प्रामाणिक भाष्य उपलब्ध है।

५. महर्षि जैमिनी प्रणीत **मीमांसा दर्शन** कलेवर से ५ दर्शनों के समूह से भी बड़ा है। मीमांसा का अर्थ जिज्ञासा=जानने की इच्छा/शोध/गम्भीर विचार, विश्लेषण है। यह दर्शन प्रारम्भ होता है "धर्म जिज्ञासा" से। वेद जो निर्देश करता है, वही धर्म है (वेद का प्रत्येक मन्त्र हमें कुछ ना कुछ क्रिया करने के लिए निर्देश करता है)। वेद अपौरुषेय है, इसलिए पूर्ण सत्य है। धर्म हमारे लिए अत्यावश्यक है। यागादि धर्म की गम्भीरता इस शास्त्र में वर्णित है। किसी वचन (चाहे शास्त्रीय हो या लौकिक हो) के कितने प्रकार के अर्थ हो सकते हैं और कौन सा अर्थ सत्य है-यह वाक्यार्थ बोध का विज्ञान इसमें आद्योपान्त भरा हुआ है। धर्म/श्रेय/उचित-अनुचित का ज्ञान हमें इन्द्रियों से नहीं, शास्त्रों से ही प्राप्त होता है। मन्त्र के विनियोग में श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान, समाख्या आधार है (पूर्व-पूर्व की बलवत्ता है)। वेद को स्वत: प्रमाण कहा। अन्य शास्त्र वेद के विपरीत न हों तो प्रमाण हैं, वेद के विरुद्ध किसी भी ग्रन्थ में कुछ भी लिखा हो, वह अप्रामाणिक है। स्तुति से प्रेरित होकर श्रद्धा से करने पर असम्भव जैसा कार्य भी सिद्ध हो जाता है।

६. महर्षि व्यास प्रणीत **वेदान्त दर्शन** में ब्रह्म (ईश्वर) के विविध गुण, कर्म, स्वभाव व नामों की चर्चा, जीवात्मा द्वारा ब्रह्म-साक्षात्कार व प्राप्ति के उपाय आदि का बहुल वर्णन होने से इस दर्शन का नाम ही ब्रह्मसूत्र है। उपनिषदों के वाक्यों का सही अर्थ मीमांसा (विचार-बोध) करने से इसे उत्तर-मीमांसा भी कहते हैं। ब्रह्म की जिज्ञासा से यह शास्त्र प्रारम्भ होता है। ब्रह्म ही इस जगत् का सर्जन, पालन, विसर्जन करता है, जीवों को कर्मों का फल देता है, वेदज्ञान प्रदाता है। वेदान्त शब्द का अर्थ है वेद का सिद्धान्त, वेद का मत/पक्ष/तात्पर्य

ये छहों दर्शन आस्तिक दर्शन हैं, भारतीय वैदिक दर्शन रूप से प्रसिद्ध हैं। हजारों-हजारों वर्षों से इन शास्त्रों का अध्ययन इनकी विशेषता को सिद्ध करता है। जीवन, जगत्, चेतन तत्त्व व दुःख-निवृत्ति के बारे में सभी शास्त्रों में एक-एक विशेष दृष्टि-दर्शन मिलता है, इनमें परस्पर विरोध नहीं है। (इनसे भिन्न नास्तिक व पाश्चात्य दर्शन है।)

प्रश्न-वर्तमान अत्याधुनिक वैज्ञानिक युग में इन पुराने दर्शन शास्त्रों को पढ़ने की क्या अवश्यकता है?

उत्तर- मनुष्य जीवन की सफलता, दुःख से दूर होना आज भी सभी को उतना ही आवश्यक है, जितना पहले था। विद्यालय आदि से प्राप्त शिक्षा (सूचनात्मक ज्ञान-जो जीवन के सम्बन्ध में कुछ नहीं) तथा धन-साधन-सम्पन्नता से हमारी सुविधाएँ बढ़ती हैं, आन्तरिक सुख इनसे नहीं मिलता है। आज मनुष्य अन्दर से अधिक दुःखी, अशान्त, उद्वविग्न, भयभीत (शंकास्पद), तनाव-अवसादग्रस्त है। पहले की अपेक्षा आज अधिक लोग अपने जीवन को स्वयं नाश करते हैं। इसलिए आज के युग में दर्शन विद्या की अधिक आवश्यकता है, क्योंकि उपरोक्त सभी समस्याओं का समाधान दर्शन शास्त्र में आज भी विद्यमान है। समस्या है तो समाधान भी चाहिए।

प्रश्न-क्या किसी ऋषि ने भी दर्शन-शास्त्र की आवश्कयता बताई है?

उत्तर-जी हाँ, ऋषियों का मन्तव्य यहाँ उल्लेख करते हैं।

महर्षि देव दयानन्द जी ने अपने तीनों प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश-तृतीय समुल्लास, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पठन-पाठन विषय एवं संस्कार विधि-वेदारम्भ संस्कार में वेद अध्ययन से पूर्व व्याकरण आदि अंग एवं इन छहों दर्शन=उपांगों को पढ़ने का विधान किया है।

इससे भी अधिक उपयोगिता बतानेवाला वचन है-पूना प्रवचन में (उपदेश मञ्जरी १३वां उपदेश, अन्तिम पृष्ठ देखें) महर्षि कहते हैं-''हमारे भारत-खण्ड देश से वेदों का बहुत सा धर्म लुप्त हो गया है और रहा सहा हम लोगों के प्रमाद से नष्ट होता जा रहा है और उसकी जगह पाखण्ड, अनाचार और दम्भ बढ़ता जा रहा है।...यदि मुझसे कोई पूछे कि इस पागलपन का कोई उपाय भी है या नहीं? तो मेरा उत्तर यह है कि यद्यपि रोग बहुत बढ़ा हुआ है, तथापि इसका उपाय हो सकता है, यदि परमात्मा की कृपा हुई तो रोग असाध्य नहीं है। वेद और ६ दर्शनों की सी प्राचीन पुस्तकों के भिन्न-भिन्न भाषाओं में अनुवाद करके सब लोगों को जिससे अनायास प्राचीन विद्याओं का ज्ञान प्राप्त हो सके, ऐसा यत्न करना चाहिए....।'' ऋषि के इस उद्गार से पाठकों को ज्ञात होगा कि महर्षि दयानन्द जी दर्शन विद्या को कितना महत्त्वपूर्ण मानते हैं।

महर्षि मनु दर्शन का महत्त्व बताते हैं-(मनुस्मृति ६-७४ द्रष्टव्य)

सम्यग्दर्शनसम्पन्नः कर्मभिर्न निबद्ध्यते।
दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते।।

इस श्लोक का अर्थ महर्षि दयानन्द जी संन्यास संस्कार विधि में करते हैं- जो संन्यासी यथार्थज्ञान वा षड्दर्शनों से युक्त है, वह दुष्टकर्मों से बद्ध नहीं होता है और जो ज्ञान, विद्या, योगाभ्यास, सत्संग, धर्मानुष्ठान वा षड्दर्शनों से रहित विज्ञानहीन होकर संन्यास लेता है वह संन्यास पदवी और मोक्ष को प्राप्त न होकर जन्म-मरण रूप संसार को प्राप्त होता है। मनुस्मृति के प्रसिद्ध व्याख्याकार आचार्य प्रो. डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी इसी श्लोक के अनुशीलन में लिखते हैं-ईश्वरादि तत्त्वों का प्रत्यक्ष कराने वाली विद्या को दर्शनविद्या कहा जाता है।

प्रश्न-इन दर्शन शास्त्रों को पढ़े बिना भी संसार में अनेक उच्च कोटि के विद्वान्-उपदेशक-प्रचारक-विचारक मिलते हैं, फिर दर्शन क्यों पढ़ें?

उत्तर-बिना दर्शन पढ़े वैदिक सिद्धान्तों को पूर्णरूप से जानना सम्भव नहीं है। दर्शन विद्या से रहित उपदेशक अपने प्रवचन-व्यवहार आदि में अनेकत्र वैदिक सिद्धान्त के विपरीत बोलते हैं, जो सामान्य जनता नहीं जान पाती है।

प्रश्न-इन दर्शन शास्त्रों को पढ़े बिना भी अधिकांश मनुष्यों ने जीवन जीया, अभी भी जी रहे हैं, आगे भी जीएँगे-फिर दर्शन की क्या आवश्यकता है?

उत्तर-हाँ जी, दर्शन पढ़े बिना मनुष्य जीवन की महत्ता, विशेषता तथा इस जीवन का अन्तिम प्रयोजन क्या है और उस चरम लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जा सकता है-कभी नहीं जान सकता है। दर्शन विद्या के बिना स्वयं के दोष को व्यक्ति जान ही नहीं सकता, हटाना तो दूर की बात है। गुरुमुख से दर्शन-शास्त्र का अध्ययन सर्वोत्तम है, अनुकूल न हो तो स्वाध्याय के रूप में पढ़ें, जो शंका हो विद्वानों से समाधान करके जीवन को सफल बना सकते हैं।

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित व उपलब्ध नये संस्करण

१. सत्यार्थ प्रकाश में क्या है? **लेखक - प्रो. धर्मवीर,** **प्रकाशक**- परोपकारिणी सभा, अजमेर,
पृष्ठ संख्या- ३२ **मूल्य** - रु. १५/-

प्रस्तुत पुस्तक डॉ. धर्मवीर जी के युवापन की रचना है। इस पुस्तक को पं. भारतेन्द्रनाथ जी (महात्मा वेदभिक्षु) ने डॉ. धर्मवीर जी से आग्रहपूर्वक लिखवाया था। पहली बार इसे सन् १९७५ में महात्मा वेदभिक्षु जी ने ही प्रकाशित किया था। एक लम्बे अन्तराल के बाद परोपकारिणी सभा ने इसका पुन:प्रकाशन किया है। इस पुस्तक को पढ़कर नये से नया व्यक्ति भी सत्यार्थप्रकाश के महत्व को समझ सकता है अर्थात् यह पुस्तक आर्यसमाज के प्रचार में सहायक सिद्ध हो सकती है। आर्य महानुभावों से अनुरोध है कि इसे अधिक से अधिक संख्या में खरीदकर नई पीढ़ी तथा नये लोगों को वितरित करें तथा प्रकाशकों से भी निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में इसे मंगायें ताकि लोग इसे खरीद सकें। इस ग्रन्थ को पढ़ने से ऋषि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने की प्रेरणा मिलती है। सत्यार्थप्रकाश की समस्त विषयवस्तु को इस ग्रन्थ में समाहित किया गया है। पाठक इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

२. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (दो भाग में)
मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६
महर्षि दयानन्द का महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार मूल्य - रु. ४००/- पृष्ठ संख्या - ६१६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

३. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित
मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिलजले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

४. इतिहास की साक्षी: लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं।

५. असली महात्मा (हिन्दी) मूल्य - रु. २००/- पृष्ठ संख्या - २४७

यह पुस्तक मूलरूप से तेलुगु में लिखी गई है। लेखक श्री एम.वी.आर. शास्त्री ने जिस शोधपूर्ण ढंग से और जिस सरसता से इस पुस्तक को लिखा है, उससे दस्तावेजों में रुचि रखने वालों और उपन्यास में रुचि रखने वालों के लिये भी यह एक अतुलनीय ग्रन्थ है। हिन्दी में अनुवाद करते समय श्री जे.एल. रेड्डी ने लेखक के मूल भावों को जिस दक्षता से संजोया है, उससे हिन्दी पाठकों को ये ऐतिहासिक दृष्टि वाला ग्रन्थ किसी उपन्यास से कम नहीं लगेगा।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाता धारक का नाम - **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।**
बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**
IFSC - PUNB0000800

भाषा–प्रौद्योगिकी में हिन्दी की प्रगति

डॉ. प्रभु चौधरी

भारत में करीब १२२ बोलियाँ बोली जाती हैं। भारत की ७२ प्रतिशत जनसंख्या भारत के गाँवों या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ लोग आज भी भारतीय भाषाओं में संवाद करते हैं, जिनमें प्रमुख है हिन्दी। भारत जैसे जनतान्त्रिक व कल्याणकारी राज्य में हिन्दी के विकास के लिए राजभाषा के संवैधानिक दायित्वों के निर्वाह के साथ ही उससे भी आगे बढ़कर भारत के सर्वांगीण विकास, जन–कल्याण के नजरिए से सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी और भारतीय भाषाओं के प्रयोग पर विचार करने की आवश्यकता है। इस नजरिए से भारत में जनसेवा से जुड़ी सभी कम्प्यूटर प्रणालियों तथा सॉफ्टवेयरों पर यथास्थिति हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग की व्यवस्था की आवश्यकता है।

भाषा–टैक्नोलॉजी में सर्वप्रथम शुरुआत हुई वर्ड प्रोसेस एप्लीकेशन से। हिन्दी में वर्ड प्रोसेस एप्लीकेशन के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग के तकनीकी पक्ष की स्थापना कर इस दिशा में पहल की और जिस्ट टेक्नोलॉजी का प्रयोग प्रारम्भ हुआ, फिर आगे चलकर सी.डेक, मॉड्यूसर, इन्फोटैक, साइबरस्केप आदि अनेक कम्पनियों ने काफी कार्य किया। हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं के लिए यूनीकोड की उपलब्धता के बाद इस क्षेत्र में गति आई है। हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में कार्य के लिए उपलब्ध यूनीकोड आधारित माइक्रोसॉफ्ट और गूगल के फोनेटिक इंटैलीजेन्ट की–बोर्ड ने टंकण प्रशिक्षण की बाध्यता को समाप्त कर हिन्दी में वर्ड प्रोसेसिंग में एक नई राह बनाई है। सी.डेक के भाषाई उपकरणों ने भी इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

आज जबकि हिन्दी और भारतीय भाषाओं में कार्य करने सम्बन्धी सुविधाएँ तो प्रायः उपलब्ध हो गई हैं, वर्ड, ऐक्सल, पॉवर पॉइंट आदि से लेकर ई–मेल और फेसबुक आदि पर हिन्दी और भारतीय भाषाओं ने अपनी एक जगह बना ली है। राजभाषा विभाग तकनीकी कक्ष सजगता से निरन्तर हिन्दी और भारतीय भाषाओं में कार्य करने सम्बन्धी सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के लिए कार्यरत है, लेकिन इस बीच बैंकों, कम्पनियों, संस्थानों व कार्यालयों की कार्य प्रणालियों में एक बड़ा परिवर्तन आ गया है, जिसके कारण उक्त तमाम सुविधाओं के बावजूद अधिकांश बैंकों, कम्पनियों, संस्थानों व कार्यालयों के कार्य में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी और भारतीय भाषाओं का प्रयोग नगण्य–सा है। यह परिवर्तन आया है एन्टरप्राइज सॉफ्टवेयरों के प्रयोग के कारण।

१९९० के दशक के बाद से टैक्नोलॉजी के विकास ने विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में संगठनों की कार्य पद्धतियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है। विशेषकर खुदरा, निर्माण और बैंकिंग, औद्योगिक व्यवसायिक क्षेत्रों ने आई.टी. समाधानों को क्रियान्वित किया है, जो उन्हें अपने दैनिक क्रिया–कलापों का बेहतर निष्पादन, प्रबन्धन और नियन्त्रण करने, कार्यकुशलता बढ़ाने तथा मार्केटिंग, लाभप्रदत्ता और पारदर्शिता जैसे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए और अपनी उत्पादकता को बढ़ाने की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण साधन साबित हुए हैं। कार्यकुशलता बढ़ाने तथा खर्च घटाने की दृष्टि से ऐसे आई.टी. समाधान सॉफ्टवेयारों का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। पिछले कुछ समय से सरकारी कम्पनियों, संगठनों, बैंकों, वित्तीय संस्थानों, बीमा कम्पनियों, राजस्व वसूली, पासपोर्ट का कार्य आदि सहित स्थानीय निकायों का कार्य बिजली–पानी के बिल आदि तेजी से ऐसी कम्प्यूटर प्रणालियों से जुड़ते जा रहे हैं जो कि एन्टरप्राइज सॉफ्टवेयर की श्रेणी में आते हैं।

आज बाजार अपने विस्तार के लिए ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्रों पर ध्यान देने लगा है। भारत सरकार भी बैंकिंग और वित्तीय सुविधाएँ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने के लिए कटिबद्ध है। बैंक वित्तीय समावेशन और कासा अभियान के माध्यम से हर व्यक्ति तक पहुँचने के लिए प्रयासरत हैं। इसके लिए भारतीय बैंकिंग क्षेत्र ने पहले से ही संचार को ध्यान में रखते हुए आवश्यक परिवर्तन किए हैं और आई.टी. समाधानों यानी एन्टरप्राइज सॉफ्टवयरों

को कार्यान्वित भी किया है।

आई.टी. समाधानों के हिन्दी और भारतीय भाषाओं में उपलब्ध न होने के कारण अधिकांश भारतीय संगठनों और कम्पनियों को ग्राहक-सेवा, जनसंचार और मार्केटिंग जैसे अपनी रणनीति के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों की उपेक्षा करते हुए इन्हें अंग्रेजी में कार्यान्वित करने पर मजबूर होना पड़ा। SAP(सैप), जे.डी. ऐडवर्ड, कोर बैंकिंग सोल्यूशन, बीमा, राजस्व आदि से संबन्धित ज्यादातर ई.आर.पी. सॉफ्टवेयर प्राय: मूलत: अंग्रेजी में हैं। जहाँ कहीं कथित रूप से हिन्दी अथवा द्विभाषी व्यवस्थाएँ हैं, भी वे मात्र संवैधानिक प्रावधानों के अनुपालन की औपचारिकता पूरी करती दिखती हैं। सी.बी.एस. कोर बीमा समाधान व ऐसे अन्य समाधानों के माध्यम से हिन्दी कार्य नगण्य है। व्यवस्था होने पर भी प्रयोग प्राय: केवल अंग्रेजी में ही होता है, जबकि ग्राहक सेवा के लिए यह प्राथमिक आवश्यकता है। इसलिए एकमात्र उपाय यही है कि आई.टी. समाधान सॉफ्टवेयरों/एन्टरप्राइज सॉफ्टवेयरों में हिन्दी-अंग्रेजी व्यवस्था अलग-अलग न रखकर इसके माध्यम से सृजित मानक पत्र/विवरणियाँ/पासबुक प्रविष्टियाँ/सूचनाएँ आदि एक ही पृष्ठ पर द्विभाषिक रूप में हों। इससे न केवल बहानेबाजी पर लगाम लगेगी बल्कि सभी क्षेत्रों में ग्राहकों की सुविधा के साथ-साथ आदतन केवल अंग्रेजी का विकल्प चुनने पर भी लगाम लगेगी और इन आई.टी. समाधानों की मदद से कम्पनियाँ, बैंक आदि ९० प्रतिशत से भी अधिक कार्य हिन्दी में कर सकेंगी।

कुछ कम्पनियाँ व संगठन आदि जिन्होंने अपने लिए विशेष रूप से एन्टरप्राइज सॉफ्टवेयर बनवाए या विकसित किए हैं और उनमें से कुछ ने प्रारम्भ से ही उसमें अंग्रेजी के साथ ही हिन्दी अथवा साथ-साथ द्विभाषीय कार्य की व्यवस्था करवा ली है।

भारत सरकार की अगले पाँच वर्षों में ई-गवर्नेंस पर करीब २२,००० करोड़ रुपये खर्च करने की योजना है। भारत की लगभग ९२ प्रतिशत जनता अंग्रेजी नहीं जानती। ऐसे में भारत जैसे जनतान्त्रिक देश में आई.टी. समाधानों में बिना हिन्दी और भारतीय भाषाओं में कार्य की सुविधा उपलब्ध करवाए ई-गवर्नेंस तथा जन-कल्याण योजनाओं को सफल बनाना कठिन है।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के साथ-साथ कुछ निजी बैंक, संगठन, कम्पनियाँ आदि अपने आई.टी. समाधानों पर हिन्दी व भारतीय भाषा की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कई निजी सॉफ्टवेयर संस्थानों जैसे-इमेज पॉइंट, सिक्रिप्ट मैजिक अब लिंग्वा नेक्स्ट आदि की टैक्नोलॉजी की मदद से रहे हैं, जो अंग्रेजी में बने आई.टी. समाधानों (सैप, बी.एस.एस., बीमा राजस्व आदि ई.आर.पी. सॉफ्टवेयरों) पर भी हिन्दी और भारतीय भाषाओं के माध्यम की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं। बैंकों व अनेक संगठनों द्वारा ऐसी टैक्नोलॉजी का प्रयोग किया जा रहा है।

हिन्दी और भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि आधुनिक सुविधाओं पर कार्य करने तथा आई.टी. समाधान उपलब्ध करवाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने की आवश्यकता है-

१. प्राथमिक शिक्षा से लेकर सभी स्तरों पर आई.टी. शिक्षा में भारतीय भाषाओं में कार्य के लिए टैक्नोलॉजी और सुविधाओं की जानकारी अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए।

२. भाषा-शिक्षकों को और स्कूल-कॉलेजों में विद्यार्थियों को हिन्दी व भारतीय भाषाओं में कार्य के लिए भाषा-प्रौद्योगिकी के कम्प्यूटर इंटरनेट पर कार्य का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। स्कूल स्तर पर ही भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर पर कार्य के लिए विकसित मानक इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

३. हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में आई.टी. समाधान, मोबाईल-बैंकिंग, ई-गवर्नेंस, ई-सेवा आदि हेतु भाषा-प्रौद्योगिकी के विकास और कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

४. प्रौद्योगिकी विकास तथा नीतिगत स्तर पर ऐसे निर्णय लिए जाने चाहिए ताकि ऐसे सभी प्रौद्योगिकी-समाधान सॉफ्टवेयर प्रारम्भ से द्विभाषी तथा आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय भाषाओं में कार्य के लिए तैयार हो सकें।

५. जहाँ पर फिलहाल ऐसा करना संभव नहीं है, ऐसे प्रौद्योगिकी-समाधानों पर उपलब्ध प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऐसी सुविधाएँ उपलब्ध करवानी होंगी जो अंग्रेजी में बने

सॉफ्टवेयर आई.टी. समाधानों पर भी हिन्दी और भारतीय भाषाओं के माध्यम की सुविधा करवा सकते हैं। इसके लिए सभी स्तरों पर आई.टी. विभाग समर्थन, प्रशिक्षण तथा रख-रखाव आदि की व्यवस्था पर भी ध्यान देना होगा।

६. सरकारी संस्थानों, संगठनों, बैंकों तथा सार्वजनिक उपक्रमों में जहाँ अभी तक आई.टी. समाधानों पर हिन्दी भाषा में कार्य की सुविधा नहीं है, वहाँ उसे उपलब्ध करवाने व कार्यान्वित करने के लिए कार्य-योजना बनानी होगी।

७. यह भी उचित होगा कि वैबसाइट अलग-अलग हिन्दी-अंग्रेजी के बजाए इस प्रकार द्विभाषा बनाई जाएं ताकि एक साथ शीर्षक ऊपर-नीचे तथा विषय सामग्री दाएँ-बाएँ द्विभाषिक रूप में उपलब्ध हो ताकि साथ-साथ अद्यतन हो और आवश्यकतानुसार हिन्दी अथवा अंग्रेजी रूप देखा जा सके। हिन्दी के लिए अन्यत्र न जाना पड़े।

ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोग भी अब मोबाइल के रूप में प्रौद्योगिकी से जुड़े हैं। मोबाइल कम्पनियाँ जनता की माँग पर मोबाइलों में भारतीय भाषाओं की सुविधाएँ उपलब्ध कवा रही हैं। यदि उन्हें बैंकों व अन्य कम्पनियों से उनकी भाषा में प्रौद्योगिकी की सुविधा मिले तो उन्हें हर नई सुविधा, योजना और रिपोर्टों की उपलब्धता जैसे अनेक लाभ मिलने लगेंगे। इससे प्राप्त होने वाले प्रमुख महत्त्पूर्ण लाभ निम्नलिखित हैं-

१. भारतीय संगठन और कम्पनियाँ आदि ऐसे आई.टी. समाधानों में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रयोग से बेहतर पारदर्शिता, संचालन एवं नियन्त्रण, उच्चतर ग्राहक संतुष्टि, कम सेवा लागत और व्यापक नियोजन जैसे लक्ष्य प्राप्त कर सकती हैं।

२. ई-गवर्नेंस, जागरूकता, बेहतर जनसंचार, जन तान्त्रिक अधिकारों के लाभ तथा जन-कल्याण योजनाओं को सफल बनाने के लिए ऐसे समाधान अत्यधिक उपयोगी होंगे।

३. ग्राहक कॉल एलर्ट, मोबाइल बैंकिंग, मोबाइल से जुड़ी सभी सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे।

४. ऐसे प्रौद्योगिकी समाधानों के उपयोग से भारतीय मुद्रण उद्योग को, मीडिया प्रकाशन प्रतिष्ठानों को लागत बचाने में मदद मिलेगी और डिजिटल दृष्टिकोण में वृद्धि होगी।

५. ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के उपयोग की मदद से बड़ी आसानी से भारतीय भाषाओं में ई-बुक, ई-मैगजीन और ई-ब्रोशन का निर्माण किया जा सकता है और इनसे समय और पैसों की बचत में मदद मिलेगी।

६. भारत के स्वास्थ्य-सेवा उद्योग को भी इससे काफी मदद मिल सकती है। डॉक्टर अपने रोगियों को ग्रामीण और घरेलू अस्पतालों में विभिन्न रिपोर्टों, नुस्खों और चिकित्सा-इतिहास रिपोर्टों को द्विभाषी या बहुभाषी प्रारूपों में उपलब्ध करवा सकेंगे और विभिन्न स्वास्थ्य सेवाओं/औषधीय उत्पादों के उपयोग के तरीके से जुड़े निर्देश, दस्तावेज व विषय सामग्री भारतीय भाषाओं में मुद्रित कर कम खर्च में मिनटों में उपलब्ध करवा सकेंगे।

७. ऐसे प्रौद्योगिकी-समाधानों से भारत में समग्र साक्षरता दर में भी वृद्धि होगी।

ये विभिन्न नए समाधान सचमुच एक उत्प्रेरक की तरह काम करेंगे और आई.टी. अनुकूलन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में भी मदद करेंगे, जो भारतीय शिक्षा, उद्योगों और व्यावसायिक समुदाय के लिए सही मायने में भारतीयकरण की दृष्टि से एक सकारात्मक विकास युग का मार्ग प्रशस्त करेगा।

आज ज्ञान-विज्ञान और व्यवसाय के प्राय: सभी क्षेत्र कम्प्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ चुके हैं। ऐसे में यदि सूचना प्रौद्योगिकी विकास, तत्सम्बन्धी प्रशिक्षण और उससे उठकर गम्भीरतापूर्वक ठोस उपाय करने होंगे। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए संवैधानिक अनुपालन हेतु केवल औपचारिकताएँ पूरी करने की मानसिकता से ऊपर उठकर यदि यथासमय उचित उपाय नहीं किए गए तो भारतीय भाषाएँ ज्ञान-विज्ञान और व्यवसाय से पूरी तरह कट जाएंगी और शायद इसी से इनका अस्तित्व भी संकट में पड़ जाएगा।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य, उत्तम शिक्षा, विद्या, शरीर और आत्मा का बल, आरोग्य, पुरुषार्थ, ऐश्वर्य, सज्जनों का संग, आलस्य का त्याग, यम-नियम और उत्तम सहाय्य के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता। - **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१**

ओ३म्

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) पिन. ३०५००१ दूरभाष– ०१४५–२४६०१६४

वेदगोष्ठी–२०१७

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध–पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध–पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत २८ वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। अब तक निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा चुका है:–

१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली।	**१२ नवम्बर, १९८८**
२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग।	**०५ नवम्बर, १९८९**
३. अथर्ववेद समस्या और समाधान।	**२७ नवम्बर, १९९०**
४. वेद और विदेशी विद्वान्।	**१६ नवम्बर, १९९१**
५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप।	**०१ नवम्बर, १९९२**
६. वेदों के दार्शनिक विचार।	**२८ नवम्बर, १९९३**
७. सोम का वैदिक स्वरूप।	**१२ नवम्बर, १९९४**
८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान।	**०३ नवम्बर, १९९५**
९. वैदिक समाज व्यवस्था।	**०१ नवम्बर, १९९६**
१०. वेद और राष्ट्र।	**२४ अक्टूबर, १९९७**
११. वेद और विज्ञान।	**०९ अक्टूबर, १९९८**
१२. वेद और ज्योतिष।	**१० नवम्बर, १९९९**
१३. वेद और पदार्थ विज्ञान	**०३ नवम्बर, २०००**
१४. वेद और निरुक्त	**१८ नवम्बर २००१**
१५. वेद में इतिहास नहीं	**०१ नवम्बर २००२**
१६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	**३१ अक्टूबर २००३**
१७. वेद में शिल्प	**१९ नवम्बर २००४**
१८. वेदों में अध्यात्म	**११ नवम्बर, २००५**
१९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन	**२७ नवम्बर, २००६**
२०. ''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है''	**१६ नवम्बर, २००७**
२१. वैदिक समाज विज्ञान	**०५ नवम्बर, २००८**
२२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद	**२३ अक्टूबर, २००९**
२३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद	**१२ नवम्बर, २०१०**
२४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद	**०४ नवम्बर, २०११**
२५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्यः वैदिक परिप्रेक्ष्य	**१६ नवम्बर, २०१२**
२६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास	**८ नवम्बर, २०१३**
२७.भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	**३१ अक्टू. १,२ नव., २०१४**
२८.भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	**२०,२१,२२ नव., २०१५**
२९.दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता	**४,५,६ नव., २०१६**
३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त	**२७,२८,२९ अक्टू., २०१७**

सत्पात्र बन सकूँ

रामनिवास 'गुणग्राहक'

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

भावार्थ- हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमें प्राप्त कराइये। (ऋषि-भाष्य)

यह मन्त्र ऋषि दयानन्द को बहुत प्रिय था, यजुर्वेद का भाष्य करते समय ऋषिवर ने इसे प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में आवश्यक रूप से लिखा है। स्तुतिप्रार्थनोपासना के मन्त्रों का प्रारम्भ भी इसी मन्त्र के साथ किया है। स्तुतिप्रार्थनोपासना के मन्त्रों का शब्दार्थ करते समय महर्षि दयानन्द ने बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है। भाषा सरल होने के साथ-साथ बड़ी रोचक, प्रवाहपूर्ण एवं मन्त्र के अर्थ को स्पष्ट कर देने वाली है। स्तुतिप्रार्थनोपासना के इन आठ मन्त्रों पर कई आर्य विद्वानों ने कलम उठाई है, उनमें से कुछ एक के विचारों को मैंने पढ़ा है। मैं जब दैनिक यज्ञ, समाज में या कभी घर में करता हूँ तो सदैव ऋषिवर के अर्थ सहित मन्त्र-पाठ करता हूँ। पाठ करते समय औपचारिकता निभाना मुझे ठीक नहीं लगता, मैं महर्षि पतंजलि के 'तज्जपस्तदर्थ भावनम्' के पालन करने का प्रयास करता हूँ। ऐसा करते समय कई बार मेरे मन में आया कि महर्षि ने इन मन्त्रों का जो अर्थ किया है, उस ऋषि के अर्थ को, ऋषि की भावना के अनुरूप थोड़ा भाव-विस्तारपूर्वक लिखा जाए ताकि भक्त-हृदय आर्यजन उसका पूरा आनन्द ले सकें। मैं अपनी इस सदिच्छा को लम्बे समय से टालता आ रहा था, लेकिन मेरे हृदय ने कहा कि किसी अच्छे विचार को कार्यरूप देने के समय बहानेबाजी करना ऐसा दोष है, जो अपराध की कोटि में रखा जाता है। हृदय में उठने वाले हर प्रकार के सद्भावों का पल्लवन उनके क्रियान्वयन पर टिका होता है। सुख-शान्ति, समृद्धि चाहने वालों का पहला कर्त्तव्य है कि अपने हृदय में उठने वाले सद्भाव, सद्विचार, सत्संकल्प एवं सद्गुण को व्यवहार का रूप देकर अपने स्वभाव का जीवन्त अंग बनाने में आलस्य प्रदान न करें।

महर्षि दयानन्द ने मन्त्रार्थ में जो कुछ कहा है, हम स्तुति-प्रार्थना की शैली में ऋषि-वाक्यों की अन्तर्यात्रा करने निकलें और अपने मन-मस्तिष्क को इस पूरी यात्रा में साथ ही रखेंगे तो मन्त्रार्थ को आत्मसात करने में सुभीता रहेगा।

'हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता! समग्र ऐश्वर्य युक्त'- ऋषि दयानन्द जी ने **सविता** का अर्थ जगत्-निर्माता व सब ऐश्वर्य से युक्त किया है। **'सविता वै प्रसविता भवति'** के अनुसार सविता का अर्थ बनाने-उत्पन्न करने वाला होता है और जिसने जो बनाया है, वह उसका स्वामी तो हो ही गया। जगत् में जो भी कुछ ऐश्वर्य है, अनमोल दिखने वाला धन है, वह सब परमात्मा ने ही बनाया है, तो वही उस सबका स्वामी ठहरा। इसके साथ ही जान लें कि सविता शब्द **'षु प्रेरणे'** धातु से बनता है। **निर्माण** और **प्रेरणा** दोनों अर्थ सविता शब्द से लिये जा सकते हैं। परमात्मा सबका निर्माण करने और सबको प्रेरित-संचालित करने वाला है। स्तुतिप्रार्थनोपासना के छठे मन्त्र में कहा है कि जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होकर हम आपको पुकारें, आपका आश्रय लेवें, उस-उसकी कामना हमारी पूर्ण होवे। अर्थात् हमें जीवन में जो कुछ चाहिए उसे पाने के लिए हमें परमात्मा से ही पुरुषार्थपूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए। इससे सिद्ध है कि परमात्मा इस संसार की हर वस्तु को बनाकर उसे अपनी अटल न्यायपूर्ण व्यवस्था के अनुरूप चलाता है, प्रेरित करता है।

'शुद्धस्वरूप सब सुखों का दाता परमेश्वर'! देव शब्द का यही अर्थ ऋषिवर ने यहाँ किया है। सामान्य भाषा में भी देने वाले को देव कहते हैं। क्या दुःख देने वाले को भी? नहीं, सुख या सुखद वस्तु देने वाले को ही देव कहा जाता है। परमात्मा भी सबके लिए सब सुखों का देने वाला है। यहाँ एक व्यावहारिक बात समझ लेनी चाहिए कि

परमात्मा अपनी ओर से कभी किसी को सुख या सुखद वस्तुएँ नहीं देता। संसार में ज्ञान से बड़ा कोई दान नहीं, ऐसा **महर्षि मनु**-**'सर्वेषामेव दानानां ब्रह्म दानं विशिष्यते'** कहते हैं। **योगिराज श्री कृष्ण** ज्ञान के बारे में लिखते हैं- **'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'** अर्थात् हमारे जीवन को ज्ञान ही सबसे अधिक पवित्र करने वाला है। जीवन की पवित्रता मानो कि सब सुखों व सुखद वस्तुओं को प्राप्त करने की पात्रता है। वह परमात्मा अपनी ओर से मनुष्य मात्र को ज्ञान-प्रेरणा निरन्तर देता रहता है। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम प्रभु-प्रदत्त प्रेरणा (ज्ञान) के अनुसार कर्म-व्यवहार करते हुए सब सुखों व सुखद वस्तुओं को प्राप्त करें। परमात्मा द्वारा सुख देना दूसरे प्रकार से भी सिद्ध होता है। हमारी कमाई हुई धन-सम्पत्ति को कोई दुष्ट व्यक्ति छीन या चुराकर ले जाए तो उस चोर को जितना दोषी मानते हैं उससे कहीं अधिक दोषी शासक व शासक की व्यवस्था को भी मानते हैं। शासक की न्याय-व्यवस्था अगर हमारी चुराई व खोई चीज को हमें दुबारा दिला दे तो हम उसका धन्यवाद करते हैं। ठीक इसी प्रकार से अगर हमारे शुभ कर्मों का यथायोग्य फल ईश्वर की अटल न्याय-व्यवस्था से मिलता है तो उसका दाता ईश्वर को ही मानना चाहिए।

मन्त्र में सविता और देव के अर्थ स्पष्ट हो जाने के बाद दो बातें शेष रह जाती हैं और वे दोनों बातें अत्यन्त स्पष्ट हैं- **'विश्वानि दुरितानि परासुव'** अर्थात् सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और **'यद् भद्रं तन्न आ सुव'** जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कराइये। मन्त्र को और सरलता से समझने के लिए **'विश्वानि दुरितानि'**-सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन से पूर्व शब्द 'सम्पूर्ण' बहुत ही ध्यान देने योग्य है। हमारे जीवन में जितने भी दुर्गुण हैं, जितने भी दुर्व्यसन हैं, उन सबको दूर करने की प्रार्थना या पुकार यह सिद्ध करती है कि हमारा जीवन पूर्णतः निर्मल और पवित्र होना चाहिए। एक भी दुर्गुण व दुर्व्यसन मेरे जीवन में शेष न रहे। अगर हम थोड़ा सा भी दुःख नहीं चाहते तो अपने अन्दर के सब दुर्गुणों को ढूँढ-ढूँढ कर निकाल फेंकें। हमारे आन्तरिक दुर्गुणों के कारण हमारे व्यावहारिक जीवन में दुर्व्यसन उत्पन्न होते हैं और दोषों, दुर्व्यसनों के परिणामस्वरूप हमें दुःख भोगने पड़ते हैं। **जिनकी दुःख दूर करने की इच्छा है वे दुर्व्यसनों को दूर भगायें। जो दुर्व्यसनों से मुक्त होना चाहते हैं वे अपने दुर्गुणों को समाप्त करने का संकल्प लें।** हमारे आन्तरिक दुर्गुण ही हमारे दुर्व्यसनों अर्थात् दुराचरणों, दुष्प्रवृत्तियों और दुष्कर्मों के बीज हैं और इन्हीं दुर्व्यसनों का परिणाम दुःख है। यह मन्त्र हमारे दुःखों को दूर करने का वैदिक उपाय बताता है। आज हम अपने दुःखों को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के मनमाने उपाय करते हैं या किसी गुरुघण्टाल के मायाजाल में फँसकर विविध प्रकार के पाखण्डपूर्ण कृत्य करते-कराते हैं। हमारे मनमाने उपायों या गुरुघण्टालों के तन्त्र-मन्त्र से दुःख दूर हो जाते तो संसार में एक भी दुःखी नहीं होता।

मन्त्र में दूसरी प्रार्थना है-**'यद् भद्रं तन्न आसुव'** अर्थात् जो कल्याणकारक गुण, कर्म और स्वभाव हैं वह सब हमको प्राप्त कराइये। जब हम अपने जीवन के सब दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर करने का सशक्त संकल्प लेकर अपनी आन्तरिक बुराइयों के विरुद्ध सफल संघर्ष छेड़ देते हैं, दुर्गुणों, दोषों व दुष्कर्मों के पतनशील प्रवाह में निर्जीव तिनके की तरह बहते रहने से आत्मबलपूर्वक मना कर देते हैं और बुराइयों के चक्रव्यूह से बच निकलते हैं तो हमारे सामने अपने हृदय को अच्छाइयों से भरते रहने का प्रश्न खड़ा होता है। यह तो सब जानते हैं कि संसार में ऐसा कुछ नहीं जो किसी प्रकार के गुणों से शून्य हो। ऐसे में हमारा हृदय-मन, बुद्धि और चित्त आदि भी गुणहीन स्थिति में नहीं रह सकते। दुर्गुणों को दूर करने के आन्तरिक अभियान के साथ-साथ हमें कल्याणकारक गुणों का आह्वान करना होगा। दुर्गुणों को दूर करके उनके स्थान पर कल्याणकारक गुणों अर्थात् सद्गुणों को बसाना जीवन-निर्माण की आवश्यक प्रक्रिया है। किसी बर्तन में कोई अनावश्यक व अनुपयोगी चीज भरी हो तो जब तक उसमें किसी अच्छी व उपयोगी वस्तु को रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती तब तक हम उस अनुपयोगी चीज को निकाल फेंकने के बारे में प्रायः नहीं सोचते। जब हमें कोई मूल्यवान् व उपयोगी वस्तु की आवश्यकता अनुभव होती है तो हम उसे पाने के प्रयास करते हैं। पाने के प्रयास करने से पूर्व

बुद्धिमान् व्यक्ति उसे सुरक्षित रखने के बारे में सोचता है तो उसे लगता है कि यह जो अनावश्यक चीज इस बर्तन में रखी है, उसे निकाल फेंको और इस बर्तन को स्वच्छ करके उपयोगी वस्तु को इसमें रख दो।

यही स्थिति मानव-जीवन की है। सांसारिक विषय-वासना व परस्पर के राग-द्वेषपूर्ण जीवन जीने वाले को जब किसी सद्ग्रन्थ के स्वाध्याय या सत्संग से यह पता चलता है कि मेरा हृदय जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्य का कबाड़ बनकर रह गया है, मेरे जीवन में आलस्य, प्रमाद, दीर्घसूत्रता आदि दोष निरन्तर बिगाड़ पैदा कर रहे हैं, ये मुझे सुख-शान्ति, समृद्धि और सन्तुष्टि नहीं दे सकते, ये मेरे जीवन को सफल और सार्थक बनाने में उपयोगी नहीं। यह ज्ञान स्वाध्याय व सत्संग के बिना नहीं होता। अधिकांश लोगों को लम्बे समय तक सत्संग-स्वाध्याय करते रहने पर भी यह ज्ञान नहीं होता, लेकिन जिन विवेकशील सज्जनों को यह ज्ञान हो जाता है तो उन्हें कल्याणकारक गुण, कर्म और स्वभाव की आवश्यकता अनुभव होने लगती है। जब उन्हें सद्गुणों की आवश्यकता अनुभव होती है तो उन्हें लगता है कि मेरे हृदय में तो दुर्गुण जड़ें जमाये बैठे हैं। जीवन को अच्छा, सुखी और सन्तुष्ट बनाने की प्रबल इच्छा जब तक हृदय में उठ खड़ी नहीं होती, तब तक हर मनुष्य को अपने हृदय में भरा पड़ा काम-क्रोध आदि दुर्गुणों का कूड़ा-कबाड़ भी कामचलाऊ व अच्छा लगता है। जैसे ही उसके मन-मस्तिष्क में कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थों की उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है और वह उन्हें पाने के लिए लालायित होने लगता है, वैसे ही उसे अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि अनुपयोगी और अनावश्यक ही नहीं लगते, बल्कि काँटे की तरह चुभने लगते हैं। इस अवस्था में आकर वह **'विश्वानि दुरितानि परासुव'** और **'यद् भद्रं तन्न आसुव'** की पुकार करने लगता है। इस अवस्था में सच्चे हृदय से की गई ऐसी प्रार्थना, पुकार ही परमात्मा के निकट सफल होती है।

''यद् भद्रं तन्न आसुव'' का जो अर्थ ऋषि दयानन्द ने किया है, वह बहुत ही चमत्कारपूर्ण एवं जीवन-निर्माण की अन्त:क्रिया को सन्तुलित-सम्यक् ढंग से प्रकट करता है। ऋषि लिखते हैं-'जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमें प्राप्त कराइये।' कल्याण करने वाले गुण, कर्म और स्वभाव की क्रमबद्धता पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। सुखी, शान्त व आनन्दपूर्ण जीवन के तीन घटक आन्तरिक हैं तथा अन्य पदार्थ बाहरी हैं। **कल्याणकारक घटकों में गुण, कर्म और स्वभाव एक पात्रता है और पदार्थ उसमें रखी जाने वाली सामग्री। जिसने तप-साधना से अपने गुण, कर्म और स्वभाव को कल्याणकारक बना लिया, परमात्मा उसके लिए कल्याणकारक पदार्थों की प्राप्ति सरल और सहज बना देते हैं।** जो अपने गुण, कर्म और स्वभाव को कल्याणकारक बनाने के लिए तप नहीं करते, स्वयं को सद्गुणसम्पन्न, सदाचारी एवं सुख का सत्पात्र बनाये बिना ही जो कल्याणकारक सुखद पदार्थों को छल-बल या कल से हथिया लेते हैं, ऐसे अभिशप्त लोगों के हाथ लगे कल्याणकारक पदार्थ कभी उनको सच्चा सुख नहीं दे पाते। सीधे शब्दों में कहें तो गुण, कर्म और स्वभाव को कल्याणकारी बनाये बिना हम कल्याणकारी पदार्थों का सच्चा सदुपयोग नहीं कर सकते। बुद्धिमान् लोग काँटों का सदुपयोग बाड़ लगाकर फलों व फसलों की सुरक्षा के रूप में करते हैं। दूसरी ओर कुछ मूर्ख लोगों ने पाकिस्तान में पंजाब के गवर्नर के हत्यारे आतंकियों पर गुलाब के फूलों की वर्षा करके विश्व के मानवतावादी जन-समुदाय के बीच स्वयं को कलंकित कर लिया।

''यद् भद्रं तन्न आसुव'' की अन्तिम लेकिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विषय वस्तु को रखना चाहते हैं। जो सच्चे अर्थों में सच्चे हृदय से अपना जीवन सुखी व श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं, उनके लिए ऋषि दयानन्द के शब्दों-**'कल्याणकारक गुण, कर्म और स्वभाव'** को समझ लेना बहुत ही आवश्यक है। जब हमारे कल्याणकारक गुण हमारे कर्मों के माध्यम से सजीव होकर हमारे स्वभाव का अंग बन जाते हैं, तब जाकर हमारा जीवन कल्याणकारक पदार्थों को पाने का पात्र बन पाता है। आज मानव की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह अपने अन्दर की ढेर सारी अच्छाइयों को अपने कर्मों-व्यवहार में उतारने से डरता है। जब तक यह डर हमारे जीवन में डेरा डाले रहेगा, तब तक हर सच्चाई और

अच्छाई मानव के संकीर्ण स्वार्थ के भार तले दबकर दम तोड़ती रहेगी। पाठक ध्यान रखें कि परमात्मा ने हमारे कल्याण को सरल और सहज बनाने के लिए हमारे हृदय में सत्य के प्रति श्रद्धा और असत्य के प्रति अश्रद्धा स्वाभाविक रूप से प्रदान की है। प्रत्येक मानव का हृदय सदैव सत्य के प्रति श्रद्धालु रहता है, आकर्षित रहता है। असत्य मानव के हृदय को कभी अच्छा नहीं लगता। असत्य मानव के हृदय में सदैव काँटे की तरह खटकता रहता है। मानव-स्वभाव की विचित्रता भी बड़ी अनोखी है। यह सच है कि सरल चित्त के व्यक्ति के हृदय में असत्य काँटे की तरह ही खटकता है, लेकिन जब वो स्वार्थ के खूंटे से बँधकर सत्य को स्वीकार करने का साहस नहीं दिखा पाता और निरन्तर इस असत्य रूपी काँटे से हृदय को लहूलुहान करता रहता है तो कुछ काल ऐसा ही होते रहने के बाद स्वार्थपूर्ति से मिलने वाले क्षणिक सुख के नशे में असत्य रूपी काँटे की इस तीखी चुभन को भी वह भाग्यहीन व्यक्ति ऐसे ही सहन करता रहता है जैसे एक शराबी मद के लिए उसकी कड़वाहट व तीखेपन को सहन करता रहता है।

कल्याण की कामना वाले व्यक्ति को सांसारिक स्वार्थ-पूर्ति से ऊपर उठकर एक अक्षय सुख पर अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा। सुधीजन जानते हैं कि झूठ की जितनी शक्ति है, जितनी आयु है, उससे मिलने वाले सुख की शक्ति और आयु भी उतनी ही होगी, उससे अधिक नहीं। झूठ सदैव सत्य से भयभीत रहता है, सत्य की एक किरण झूठ को धराशायी कर देती है, ठीक इसी प्रकार से असत्य के बल पर सुख-शान्ति पाने वाले व्यक्ति सत्य से भयभीत होकर जीवन जीते हैं, उनका सुख सत्य की सम्भावना देखकर ही भाग खड़ा होता है। क्या लाभ उस टूटे-फूटे, डरे-सहमे सुख का? सत्य से डरकर उल्लू की तरह अँधेरे में कब तक ऐसे सुख को भोगकर सन्तुष्ट होते रहोगे? वह सुख ही क्या जो अपने इष्ट-मित्रों व परिजनों के साथ मिलकर खुले में सार्वजनिक रूप से न भोगा जा सके? इसीलिए ऋषि दयानन्द कल्याणकारक गुणों को कर्मों में सजीव और साकार करके अपने स्वभाव का अंग बनाने की सांकतिक प्रेरणा कर रहे हैं। गीता में श्री कृष्ण जी भी शब्दान्तर से यही सन्देश दे रहे हैं कि संसार में सब प्राणी अपनी प्रकृति अर्थात् स्वभाव के अनुसार ही अपनी समस्त चेष्टाएँ (कर्म) करते हैं, इसलिए स्वभाव को ही अच्छा (श्रेष्ठ) बनाओ, अपनी बुराइयों को छिपाकर अच्छा दिखने से क्या लाभ? स्वभाव को श्रेष्ठ बनाने-सुधारने का सच्चा और सरल रास्ता ऋषि दयानन्द बता रहे हैं कि अपने हृदय में सोये पड़े हुए अपने सद्गुणों को कर्मों में उतारिये। हम जब निरन्तर अपने सद्गुणों को कर्मों का सहारा देते रहेंगे तो एक दिन हमारे सद्गुण हमारे स्वभाव का अंग बन जाएंगे। जब हम अपने सद्गुणों को अपने कर्मों के द्वारा अपने स्वभाव का अंग बना लेंगे, तब इस संसार के समस्त कल्याणकारक पदार्थों को प्राप्त करने के अधिकारी-पात्र बन जाएंगे। दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों से निकलकर कल्याणकारक गुण, कर्म स्वभाव और पदार्थों को प्राप्त करने की अन्तर्यात्रा, मन्त्रानुसार ऋषिवर ने जिस रूप में रखी और वह जैसी समझ में आई, वैसी मैंने सच्चे हृदय से, सुधीजन के कल्याण की कामना से प्रकट कर दी। आशा है अध्यात्म-पथ के पथिक इससे लाभ उठाएँगे।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

ऋषि मेला – २०१७
स्थान – ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर
कार्यक्रम

शुक्रवार, दिनांक २७ अक्टूबर, २०१७

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ।

०९.०० से ०९.३० तक – वेद प्रवचन

ब्रह्मा –पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से ११.०० तक – **ध्वजारोहण व उद्घाटन सत्र**

११.०० से १२.३० तक – **समाज–सुधार–दशा और दिशा**

१२.३० से १४.०० तक – भोजन, विश्राम

१४.०० से १७.०० तक –**राष्ट्र–निर्माण में आर्यसमाज की भूमिका**

भजन–प्रवचन–सम्मान

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ, सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धर्मनिरपेक्षता तथा मत–मतान्तर पर विचार – भजन–प्रवचन**

शनिवार, दिनांक २८ अक्टूबर, २०१७

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.०० तक – यज्ञ, वेदपाठ।

०९.०० से ०९.३० तक – वेद–प्रवचन

ब्रह्मा – पं. सत्यानन्द वेदवागीश

०९.३० से १०.०० तक – प्रातराश

१०.०० से १२.३० तक – **शिक्षा का महत्त्व और चुनौतियाँ**

भजन–प्रवचन–सम्मान

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **२१वीं सदी और महर्षि दयानन्द**

भजन–प्रवचन

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **आचार्य धर्मवीर–वेद–प्रचार सम्मेलन, भजन–प्रवचन**

रविवार, दिनांक २९ अक्टूबर, २०१७

०५.०० से ०६.३० तक – सूक्ष्म क्रियाएँ–आसन–प्राणायाम–ध्यान–सन्ध्या

०७.०० से ०९.३० तक – यज्ञ, वेदपाठ, **पूर्णाहुति**,

०९.३० से १०.०० तक – वेद–प्रवचन

ब्रह्मा–पं. सत्यानन्द वेदवागीश

१०.०० से १०.३० तक – प्रातराश

१०.३० से १२.३० तक – **राष्ट्रनिर्माण में युवाओं की भूमिका**

भजन–प्रवचन

१२.३० से १४.०० तक – भोजन व विश्राम

१४.०० से १७.०० तक – **स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास एवं गुरुकुलों की प्रासंगिकता**

भजन एवं प्रवचन

१८.०० से २०.०० तक – यज्ञ–सन्ध्या व भोजन

२०.०० से २२.०० तक – **धन्यवाद व समापन सत्र**

वेद–गोष्ठी

विषय : वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त

२७ अक्टूबर : उद्घाटन सत्र – ११.०० से १२.३० तक

: द्वितीय सत्र – १४.३० से १७.०० तक

२८ अक्टूबर : तृतीय सत्र – १०.०० से १२.३० तक

: चतुर्थ सत्र – १४.३० से १७.०० तक

२९ अक्टूबर : समापन सत्र

कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन संभव है।

शङ्का समाधान - ११

डॉ. वेदपाल, मेरठ

शङ्का- १. स्थाली पाक किसे कहते हैं?

२. ऋत्विग्वरण (संकल्प पाठ) करवाते समय यजमान के हाथ में कुछ द्रव्य-पुष्प-चावल-धनराशि रखवाना चाहिए या खाली हाथ ही संकल्प करवाना चाहिए?

३. ''ओ३म् भूर्भुवः स्वः इस मन्त्र का उच्चारण करके ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य के घर से अग्नि ला.....''- इसका क्या अभिप्राय है?

वन्दना शास्त्री, गुरुकुल दाधिया

समाधान- १. स्थालीपाक-स्थाल्यां परिपक्व ओदनः स्थालीपाकः- स्थाली में पकाया हुआ ओदन-ब्रीहि स्थालीपाक कहलाता है। सामान्यतः यज्ञ का हविर्द्रव्य घृत के पश्चात् ब्रीहि-यव हैं। याज्ञवल्क्य ने वैदेह जनक के यह पूछने पर कि पय-दुग्ध और दुग्ध-उत्पाद घृत आदि के उपलब्ध न होने पर किससे आहुति दे? का उत्तर देते हुए कहा कि- **'ब्रीहियवाभ्यामिति'** (श.प. ११.३.१.२) ब्रीहि-यव से आहुति दे।

कात्यायन श्रौतसूत्रानुसार भी जहाँ हविर्द्रव्य ग्रहण का प्रसंग हो तब ब्रीहि अथवा यव ग्रहण करना चाहिए-

ब्रीहीन्यवान्वा हविषि- (का. श्रौ. १.९.१)

हव्य के लिए ब्रीहि काग पाकस्थाली (सम्प्रति भगौना, कुकर आदि) में पकाकर आहुति देने के लिए तैयार द्रव्य स्थालीपाक है।

महर्षि दयानन्द ने मिश्री, केसर, कस्तूरी, जायफल, जावित्री आदि से मिश्रित हविर्द्रव्य को मोहन-भोग, मोदक, मीठा भात, खीर, खिचड़ी आदि को स्थालीपाक नाम से अभिहित किया है (द्र. संस्कार विधि, सामान्य प्रकरणम्) खिचड़ी के विषय में यह ध्यान रखने योग्य है कि प्रायः ब्रीहि-चावल तथा दाल-उड़द, मूंग को मिलाकर इसे बनाया जाता है, किन्तु नमक मिश्रित होने से यह हव्य नहीं होती। स्यात् महर्षि ने अनेक पदार्थों के मिश्रण होने से नमक न होते हुए भी खिचड़ी कहा है, क्योंकि उत्तरी भारत में किन्हीं पदार्थों के मिश्रण को भी खिचड़ी कह दिया जाता है।

ब्रीहि तथा यव के उपयोग के विषय में यह महत्त्वपूर्ण है कि एक समय में एक का ही उपयोग किया जाता है, भले ही दोनों पदार्थ उपलब्ध हों। तद्यथा-

''यद्येकस्मिन् काले ब्रीहियवौ प्रक्रियेतान्यतरस्य कृत्वा कृतं मन्येत।'' -(गोभिल गृ. १.४.२२)

तथा इनके उपयोग का काल भी स्मरण रखना चाहिए कि ब्रीहि की उत्पत्ति-फसल तैयार होकर नवान्न के रूप में ब्रीहि के आने से पूर्व यव तथा यव की फलस आने (ब्रीहि की फसल आने से लेकर यव की फसल के आगमन) तक ब्रीहि का उपयोग करना चाहिए। तद्यथा-

''स्वयन्त्वेवाशस्यं बलिं हरेत् यवेभ्योऽध्याब्रीहिभ्यो ब्रीहिभ्योऽध्यायवेभ्यः सत्वाशस्यो नाम बलिर्भवति।'' (तदेव १.४.२९) तथा '.....स्थालीपाकीयान् ब्रीहिन् वा यवान् वा.....' (तदेव १.५.२०) सूत्रस्थ 'वा' शब्द का दो बार प्रयोग तुल्यविकल्प का ज्ञापक है।

यहाँ यह स्मरणीय है कि यज्ञ का हव्य हुतशेष के रूप में भक्ष्य भी है। उक्त पदार्थों से निर्मित हव्य से आहुति प्रदान के साथ यज्ञशेष के रूप में भक्षण भी सम्भव है। वर्तमान में प्रचलित सामग्री हव्य तो हो सकती है, किन्तु भक्ष्य नहीं है और वह पकाई भी नहीं जाती। अतः उसे स्थालीपाक नहीं कहा जा सकता।

२. ऋत्विग्वरण-ऋत्विक्-वरण के सन्दर्भ में जानने से पूर्व यह जानना उचित रहेगा कि ऋत्विक् कौन है? तथा उसका वरण क्यों व कब आवश्यक है?

दर्शपौर्णमास (अमावस्या व पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला यज्ञ) आदि यज्ञ सम्पादन प्रत्येक यज्ञाभिलाषी के लिए सुकर नहीं है। डॉ. मनोहरलाल द्विवेदी, (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) का कथन है कि तीन घण्टे में सम्पाद्य दर्शपौर्णमास को कराने के लिए विद्वान् (साधारण नहीं) व्यक्ति को भी अभ्यास करने के लिए छः महीने का समय चाहिए। शेष श्रौतयाग तो द्वादशाह से लेकर सत्र के रूप में बहुदिन साध्य हैं। अतः इन्हें सम्पन्न कराने के लिये कर्मकाण्ड कुशल ऐसा व्यक्ति जो श्रौत-

स्मार्त ग्रन्थों का पारदृश्वा हो, ऋत्विक् रूप में अपेक्षित है। ये मुख्यत: होता, अध्वर्यु, उद्गाता एवं ब्रह्मा-चार हैं, किन्तु अपने सहयोगियों के साथ इनकी संख्या सोलह होती है।

सामान्यत: व्यक्ति दो प्रकार के यज्ञ सम्पादित करता है-**१. नित्य यज्ञ**- इनमें दैनिक अग्निहोत्र, स्मार्त यज्ञों के रूप में वैश्वदेव कर्म- जिसमें ब्रह्मयज्ञ आदि पञ्चमहायज्ञ प्रमुख हैं। इन्हें सम्पन्न कराने के लिए ऋत्विक्-पुरोहित की अपेक्षा नहीं है। यह यजमान द्वारा स्वयं सम्पाद्य हैं- 'पाकयज्ञेषु स्वयं होता भवित'-(गोभिल गृ. १.९.८)

२. नैमित्तिक यज्ञ- (इनमें सभी संस्कार तथा श्रौतयज्ञ सम्मिलित हैं।) इनके सम्पादनार्थ यजमान को ऋत्विक् का साहाय्य अपेक्षित है, क्योंकि इन यज्ञों के सम्पादन में विधि-दक्ष व्यक्ति ही सम्यक् प्रकार से निर्देशन कर यज्ञ को सफल बना सकता है। महर्षि कृत ऋत्विजों का लक्षण है-

''अच्छे विद्वान्, धार्मिक, जितेन्द्रिय, कर्म करने में कुशल, निर्लोभ, परोपकारी, दुर्व्यसनों से रहित, कुलीन, सुशील, वैदिक मतवाले, वेदवित् एक दो तीन अथवा चार का वरण करें''- (संस्कार विधि, सामान्यप्रकरणम्)

सूत्रकारों ने ऋत्विक् के महत्त्वपूर्ण होने के कारण उसकी अर्हता निर्धारित की है। लाटयायन श्रौ. १.१.७ के अनुसार-ऋत्विक् आर्षेय, अनूचान, साधुचरण-सदाचारी, वाग्मी हो, उसके न तो कोई अंग अतिरिक्त हो (जैसे छठी अंगुली आदि) और न ही कोई अंग न्यून हो, अनतिकृष्ण-अत्यधिक काले बालों वाला अर्थात् बालक न हो तथा अनतिश्वेत -अतिश्वेत वालों वाला अर्थात् वृद्ध न हो। सत्याषाढ़ श्रौतसूत्र २७.४.८ ने महत्त्वपूर्ण शर्त रखी है कि अनूचान=सांग वेद का अध्येता, प्रवक्ता तो हो, किन्तु व्यापारी (इतनी दक्षिणा होगी ही- इस प्रकार सौदेबाजी करने वाला) न हो। जैसे- **'नाननूचानमृत्विजं वृणीते न पणमानम्'** (वाराहश्रौतसूत्र १.२३) में आर्षेय, युवा तथा बह्वपत्य=बहुत सन्तानवाला होना ऋत्विज् की अर्हता स्वीकार की है- **'ब्राह्मणा ऋत्विज् आर्षेया महान्तो युवानो वह्वपत्या:'**। (कात्यायन श्रौतसूत्र २.१.१७) भी ब्रह्मिष्ठ के ऋत्विग्वरण का समर्थक है।

महर्षि दयानन्दकृत ऋत्विज् लक्षण श्रौतसूत्र विहित सभी लक्षणों को अन्तर्निहित किए है। यह उपरिवर्णित विवरण की तुलना करके स्पष्ट देखा जा सकता है। इस प्रकार का योग्य व्यक्ति अपने समय और योग्यता से यज्ञ की सफलता में योगदान करता है, तो व्यावहारिक दृष्टि से भी उचित है कि उसका योगक्षेम भली प्रकार से हो, यह दायित्व भी यजमान का है। इसके प्रतिदानार्थ दक्षिणा का विधान है। ऋत्विग्वरण के समय दिया जाने वाला द्रव्य प्रतीकात्मक (Token Money) है। साथ ही दक्षिणा का भाग है। यदि इस व्यवस्था की उपेक्षा होगी, तब योग्य ऋत्विजों की उपलब्धता भी कठिन होगी। ऋत्विज् के लिए योग्य है कि उपर्युक्त गुणों से युक्त तो हो, किन्तु सौदेबाजी से बचे, किन्तु यजमान के लिए भी उचित है कि ऋत्विक् अर्घ्य=मानार्ह है। अत: अपने से उत्तम पदार्थ दे। जैसे-जिस प्रकार के वस्त्र वह धारण करता है, उससे अच्छे वस्त्र ऋत्विक् को दे, क्योंकि ऋत्विक् द्वारा सम्पादित यज्ञ यजमान का है, फल प्राप्ति का अधिकारी भी यजमान है। अत: यजमान द्वारा प्रभूत दक्षिणा का विधान शास्त्र सम्मत है। शतपथ ब्राह्मण में जनक द्वारा बहुदक्षिणा यज्ञ के प्रसंग उपलब्ध हैं। गोभिल गृ. १.९.१०-११ ने भी सुदा: पैजवन का उल्लेख किया है कि उसने एक लाख (गौ/मुद्रा) दक्षिणा दी।

संस्कार विधि सामान्य प्रकरण में महर्षि दयानन्द का एतद्विषयक निम्न निर्देश है- ''**ऋत्विग्वरणार्थं कुण्डलाङ्गुलीयक वासांसि**'' अर्थात् ऋत्विग्वरण के लिए कुण्डल, अंगूठी तथा वस्त्र। साथ ही सामान्य प्रकरण में **'सर्वं वै पूर्णं स्वाहा'** के पश्चात्.....''**इस मन्त्र से आहुति देके जिसको दक्षिणा देनी हो देवे वा जिसको जिमाना हो जिमा, दक्षिणा देके सबको विदा कर.....।**''

इस प्रकार ऋत्विग्वरण शास्त्रविहित तथा महर्षि दयानन्द सम्मत है, उसका द्रव्य द्वारा सत्कार यजमान का दायित्व है, किन्तु सूत्र ग्रन्थों में कहीं भी ऋत्विग्वरणार्थ-पुष्प तथा चावल का वर्णन नहीं है।

३. अग्न्याधान- 'ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य के घर से अग्नि ला' का अभिप्राय निम्न प्रकार समझा जा सकता है-

क- श्रौत आधान-यज्ञ सम्पादन के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है-अग्नि का स्थापन वा आधान करना। यज्ञ के

मुख्यतः दो भेद हैं- १. श्रौत, २. स्मार्त्त। दोनों ही प्रकार के यज्ञ सम्पादन हेतु अग्नि का आधान आवश्यक है। श्रौत सूत्रकार यज्ञों का विधान करते हैं। सभी हविः तथा सोम यज्ञों के लिए अग्नि की प्राप्ति आधान के पश्चात् ही सम्भव है। आधान के पश्चात् यदि किसी कारणवश अग्नि संरक्षित न रह सके, तब पुनः आधान करना होता है। इसे पुनराधेय अथवा पुनराधान कहते हैं।

आधान करने के लिए अग्नि प्राप्ति के प्रमुख साधन हैं- **(क)** अरणि मन्थन द्वारा अग्नि को उत्पन्न करके उसे गार्हपत्य खर में स्थापित करना- **''गार्हपत्यागारे निर्मथ्याभ्यादधाति.''** (कात्यायन श्रौ. ४.७.१४)

(ख) वैश्य, अम्बरीष-भड़भूजा, महानस-अक्षीणाग्नि से अग्नि लाकर गार्हपत्य खर में स्थापित करना- **''वैश्यकुलाम्बरीषमहानसांद्वा''**-(का. श्रौ. ४.७.१५)

इस प्रकार स्थापित/आहित अग्नि में ही सभी यज्ञ सम्पन्न होते हैं, इसे सम्पन्न करने वाला यजमान 'आहिताग्नि' कहलाता है। यजमान अग्निहोत्र आदि यज्ञ करने के लिए गार्हपत्य खर से अग्नि का उद्धरण कर आहवनीय खर में स्थापित करता है।

यहाँ यह विशेष ध्यान देने योग्य है कि अग्नि मन्थन से उत्पन्न हो अथवा वैश्यादि के आगार से प्राप्त की गई हो, उसे गार्हपत्य खर में स्थापित करते समय **''भूर्भुवः स्वर्धौरिव ....आदधे''** (यजु. ३०५) मन्त्रपाठ का विधान है-

''दारुभिर्ज्वलन्तमादधाति 'भूर्भुवः'' (यजु. ३.५) इति सम्भारे 'ष्यमुष्य त्वा व्रतपते व्रतेनादध' इति यथार्षि'' (का. श्रौ. ४.९.१)

इसी प्रकार आहवनीयागार में भी समन्त्रक (यजु. ३. ५ मन्त्र पूर्वक) अग्नि स्थापित करनी होती है।-(द्र. का. श्रौ. ४.९.१४) इस अग्न्याधान का वर्णानुसार काल निर्धारण श्रौत सूत्रों में द्रष्टव्य है। इस आधान को श्रौत आधान कहा जाता है। इस श्रौत अग्नि में नित्य अग्निहोत्र करने वाला ही 'अग्निहोत्री' कहलाता है।

ख- स्मार्त्ताधान- स्मार्त्त कर्म सम्पादन की साधनभूत अग्नि स्मार्त्त है। उसका आधान स्मार्त्ताधान है। गृह्यसूत्रानुसार इसकी विधि है-

(१) 'भूर्भुवः स्वरित्यभिमुखमग्निं प्रणयन्ति'-(गोभिल गृ. १.१.११)

(२) 'वैश्यकुलाम्बरीषाद्वाऽग्निमाहृत्याभ्यादध्यात्'-(तदेव १.१.१५)

(३) 'अपि वा बहुयाजिन एवागाराद् ब्राह्मणस्य वा राजन्यस्य वा वैश्यस्य वा' (तदेव १.१.१६)

(४) 'आवसथ्याधानं दारकाले। दायाद्य काल एकेषाम्। वैश्यस्य बहुपशोर्गृहादग्निमाहृत्य।' (पारस्कर गृ. १.१.१-३)

(५) 'श्रोत्रियागारान्मथित्वा वाग्निमादाय पुनरौपासनम् आदधीत' (वैखानस गृ. ३.६)

गृह्यसूत्रकारों द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य के घर से अग्नि लाने का अभिप्राय है कि इनके यहाँ श्रौत-स्मार्त्त अग्नि स्थापन सम्भव है। पारस्कर का वैश्य को बहुपशोः कहने का तात्पर्य समृद्धि से है। श्रौत दृष्टि से धनहीन व्यक्ति इन यज्ञों का सम्पादन नहीं कर सकता। सम्पन्नता होने पर अग्नि स्थापन की सम्भावना प्रबलतर हो जाती है। गोभिल ने स्यात् इसीलिए 'बहुयाजिनः' शब्द का प्रयोग किया है।

'भूर्भुवः स्वः' व्याहृतिपूर्वक अग्नि-प्रणयन का तात्पर्य यह भी सम्भव है कि यजमान जिस अग्नि को ले जा रहा है वह साधारण अग्नि नहीं है, अपितु वह मात्र पृथिवी स्थानी न होकर तीनों लोकों में उपस्थित अग्नि है। यास्क का निम्न कथन ध्यान देने योग्य है-

'स न मन्येतायमेवाग्निरित्यप्येते उत्तरे ज्योतिषी अग्नी उच्येते।' -(निरुक्त ७.४.१७)

'त्रीणि ज्योतींषि.....' (यजु. ८.३६) कहते हुए वेद तीन ज्योति का संकेत कर रहा है। व्याहृतित्रयपूर्वक अग्निप्रणयन उक्त सन्दर्भों के साथ आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

महर्षि दयानन्द द्वारा समन्त्रक ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य के घर से अग्नि लाने का (क्योंकि महर्षि ने गार्हपत्य का उल्लेख नहीं किया) अभिप्राय सुस्पष्ट है कि प्रायः व्यक्ति/यजमान आहिताग्नि नहीं है। गार्हपत्यागार में अग्नि न होने के कारण यज्ञीय अग्नि ऐसे त्रैवर्णिक व्यक्ति जो यज्ञकर्त्ता होगा अथवा सत्त्वगुणोपेत हो, उसके घर से अग्नि लाकर अग्न्याधान

कर ले। साथ ही महर्षि ने एक अन्य विकल्प भी दिया है कि उक्त स्थान से अग्नि लाना सुगम न हो अथवा किसी कारणवश वहाँ से प्राप्ति सम्भव न हो, तब व्यक्ति क्या करे? महर्षि का निर्देश है कि 'घृत का दीपक जला उससे कपूर में लगा' अग्न्याधान की विधि सम्पन्न कर लेनी चाहिए।

यहाँ यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि महर्षि ने यज्ञ को सूत्रकारों की जटिलता से मुक्त कर सभी को करने का अधिकार दिया है। **इसलिए महर्षि की दृष्टि में आधान एक पृथक् यज्ञ न रहकर अग्निहोत्रादि यज्ञों का अंगभूत कर्म हो गया है।**

महर्षि की यज्ञीय दृष्टि को समझने के लिए ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका (वेदविषय विचारः) का निम्न सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण है-

''किं यज्ञानुष्ठानार्थं भूमिं खनित्वा वेदिः, प्रणीतादीनि पात्राणि, कुशतृणं, यज्ञशाला, ऋत्विजश्चैतत्सर्वं करणीयमस्ति?

अत्र ब्रूमः-**यद्यदावश्यकं युक्तिसिद्धं तत्तत्कर्त्तव्यं नेतरत्।.....परन्त्वेवं प्रणीतायां रक्षितायां पुण्यं स्यादेवं पापमिति यदुच्यते, तत्र पापनिमित्ताभावात्सा कल्पना मिथ्यैवास्ति।**''

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने,
जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

विशेष सूचना

परोपकारी-पत्रिका के सभी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि डॉ. धर्मवीर जी से सम्बन्धित कोई पत्र, चित्र, ऑडियो, वीडियो आदि आपके पास हों तो कृपया हमें सूचित करें।

डॉ. धर्मवीर जी के जीवन पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए जिन भी महानुभावों के पास उनसे सम्बन्धित कोई भी संस्मरण, विचार या कविता आदि हों, वे भी अतिशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, ताकि आपके लेख स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें।

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४

ई-मेल-psabhaa@gmail.com

परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर-३०५००१ (राज.)

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० सितम्बर २०१७ तक)

१. श्री अनुपम आर्य, अजमेर २. श्री वासुदेव आर्य/श्रीमती कुमुदिनी आर्य, अजमेर ३. श्री बदन सिंह शर्मा, मथुरा ४. श्रीमती याशोदा रानी सक्सेना, कोटा ५. श्री रामदेव आर्य, अजमेर ६. मै. स्वस्तिकॉम चेरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती ७. श्री शिव कुमार मदान, नई दिल्ली ८. श्री हरसहाय सिंह आर्य, बरेली ९. श्री सन्त कुमार, अकबरपुर १०. श्री रमेश मुनि, अजमेर ११. श्री हनुमान प्रसाद आर्य, जयपुर १२. श्रीमती सरला मेहता, अजमेर १३. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, ऋषि उद्यान, अजमेर १४. स्वामी देवेन्द्रानन्द, ऋषि उद्यान, अजमेर १५. श्री अशोक कुमार आर्य, जयपुर १६. जस्टिस श्री प्रीतम पाल व श्रीमती माया, चण्डीगढ़ १७. श्री देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर १८. श्री अशोक कुमार मीना, सवाईमाधोपुर १९. श्री लक्ष्मण आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर २०. श्री श्याम सुन्दर राठी व श्रीमती कान्ता राठी, दिल्ली २१. श्री सुरेश कुमार सैनी, गंज बसौदा, विदिशा २२. मै. जेनिथ एन्टरप्राइसेस, दिल्ली २३. श्री भव्य नवाल, ब्यावर २४. श्री प्रियव्रत आर्य, नई दिल्ली २५. श्री चौ. ब्रह्मसिंह, मुजफ्फरनगर २६. श्री आलोक शंकर, लखनऊ २७. श्री अभयदेव, दिल्ली २८. श्रीमती मोहना, अजमेर २९. श्री सुरिन्दर कुमार सिंगला, चण्डीगढ़ ३०. डॉ. अर्जुनदेव तनेजा व श्रीमती किरन तनेजा, नई दिल्ली।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० सितम्बर २०१७ तक)

१. श्री अमित माहेश्वरी व सुमन माहेश्वरी, मुंबई २. श्री राममूरत व श्रीमती अरशा देवी, सोनभद्र ३. श्री सुदर्शन कुमार कपूर, पँचकुला ४. श्री जगमोहन लाल गुप्ता, नई दिल्ली ५. कै. सी.पी. त्यागी/श्रीमती कमलेश त्यागी, रुड़की ६. श्रीमती दक्षा पी. ठक्कर, अहमदाबाद ७. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट ८. श्रीमती निर्मला देवी, अजमेर ९. श्री बालाराम, टीकमगढ़ १०. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर ११. श्री चन्द्रप्रकाश झँवर, भीलवाड़ा १२. श्री नारायण सिंह, चांपानेरी, अजमेर १३. रमेश मुनि, अजमेर १४. श्री हनुमान प्रसाद आर्य, जयपुर १५. श्री कैलाश जोशी, अजमेर १६. श्री शंकरलाल आर्य, जोधपुर १७. श्री अर्जुन आर्य, शाजापुर १८. श्री शिखर सिंगला, अजमेर १९. श्री अमरलाल गोपालानी, इन्दौर २०. श्रीमती वीना देवी पतनानी, अहमदाबाद २१. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, ऋषि उद्यान, अजमेर २२. श्रीमती सरला मेहता, अजमेर २३. श्री विजय कुमार, अजमेर २४. श्री वासुदेव आर्य, अजमेर २५. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर २६. श्री महेश जोशी, अजमेर २७. श्रीमती किशोर, ऋषि उद्यान, अजमेर २८. श्री श्याम सिंह, अजमेर २९. श्री भूपेन्द्र, अजमेर ३०. श्रीमती रतनदेवी, अजमेर ३१. श्रीमती रामेश्वरी देवी कांकाणी, अजमेर ३२. श्री कैलाश जोशी, अजमेर ३३. श्रीमती वेदवती, उदयपुर ३४. श्रीमती तारामणि आर्य, मुंबई ३५. श्रीमती तरुणा गहलोत, अजमेर ३६. श्री रामनिवास, अजमेर।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

परोपकारिणी सभा की दक्षिण भारत-यात्रा

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

परोपकारिणी सभा कुछ वर्षों से देश के विभिन्न भागों में वेद-प्रचार तथा संगठन के लिये प्रचार-यात्राओं का आयोजन करती चली आ रही है। इन यात्राओं में आर्यसमाज को क्या लाभ पहुँचा इस पर कभी एक पृथक् लेख लिखा जायेगा। अपने निधन से कुछ समय पूर्व ऋषि मेला के तुरन्त पश्चात् मान्य धर्मवीर जी ने सन् २०१६-१७ के लिये 'कहाँ की यात्रा निकाली जावे' उसकी रूपरेखा बनाने के लिये इस विनीत से बात की तो मैंने उन्हें कहा, इस विषय में सोच रखा है, परन्तु कुछ ठहर कर बताऊँगा। फिर उन्हें बता दिया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की संन्यास-दीक्षा शताब्दी पर उनके जीवन की दो दक्षिण भारत यात्राओं का उद्देश्य लेकर हैदराबाद स्टेट के बलिदानी आर्यवीरों, हुतात्माओं का स्मरण करने-करवाने दक्षिण दिशा को चलेंगे।

आपको यह योजना बहुत भाई। आपने कहा, परोपकारी में इसकी घोषणा कर दें। उन्हें कहा गया कि घोषणा तो आप या मन्त्री जी ही करेंगे, परन्तु कुछ रुकिये। मार्च-अप्रैल में जब मैं परोपकारी में स्वामी जी पर लिखना आरम्भ करूँ तब आप घोषणा करना। मन्त्री जी से भी बात हो गई। श्रद्धेय धर्मवीर जी चल बसे फिर भी हम अपने निश्चय के अनुसार शताब्दी वर्ष पर कुछ कर दिखाने के लिए जुट गये। देश की परिस्थितियों, वर्षा-बाढ़ आदि के कारण तिथियाँ बदलनी पड़ गईं।

अजमेर से तो हम छः व्यक्ति ही निकले। मान्य इन्द्रजित् देव जी तथा आचार्य नन्दकिशोर किन्हीं कारणों से न जा सके। आरक्षण उनका भी हो चुका था। इन्दौर हमारा पहला पड़ाव था। वहाँ तो हम छः यात्री ही पहुँचे। हैदराबाद से राहुल जी और रणवीर जी भी साथ हो लिये। बीदर से ये दोनों आगे न जा सके, परन्तु कर्नाटक से ऋषि मित्र जी तथा श्री राम मोहन जी केरल तक हमारे साथ रहे।

इन्दौर के तीनों समाजों के सज्जनों ने जिस स्नेह, सौजन्य व सेवा का परिचय दिया उसे हम भूल नहीं सकते। उपस्थिति तो कम रही, परन्तु उत्साह, लगन व प्रेम में कोई कमी नहीं थी। हैदराबाद में पं. नरेन्द्र जी को समर्पित पुस्तक 'वैदिक इस्लाम' का नरेन्द्र भवन में विमोचन था। मल्हार नगर आर्यसमाज ने इसकी एक सहस्र प्रतियाँ माँग लीं। इन्दौरवालों की माँग उनके जीवन व उत्साह का परिचय दे रही थी। श्री प्रकाश आर्य जी भी वहाँ पहुँच गये थे।

प्रत्येक पड़ाव पर मैं अपने व्याख्यानों में स्वामी श्रद्धानन्द जी पर अब तक की अप्रकाशित सामग्री तथा दक्षिण के वीरों पर बोलता रहा। श्री मन्त्री जी सभा के कार्यों का परिचय देकर अपना सन्देश देते रहे। इन्दौर के मल्हारगंज समाज के प्रधान जी, मन्त्री जी तथा युवक पुरोहित जी का धर्मभाव व सेवाभाव प्रशंसा योग्य था। देवियों की उपस्थिति नाममात्र रही। चलने लगे तो स्वामी वैदिकानन्द जी के छोटे सुपुत्र (श्रीयुत् वेदप्रताप वैदिक के छोटे भ्राता) स्टेशन पर मिलने आ गये। हमें ऐसा लगा कि सदियों का बिछड़ा भाई मिल गया।

इन्दौर से हम हैदराबाद गये। स्टेशन पर श्री पं. प्रियदत्त जी तथा अथक मिशनरी पं. रणवीर शास्त्री जी हमें लेने पहुँच गये। पहले ही दिन मन्नानूर (पं. नरेन्द्र जी के काला पानी) की यात्रा की इन दोनों ने व्यवस्था कर दी। श्री भक्तराम जी (पं. गंगाराम जी के सुपुत्र), राहुल जी की बहिन का परिवार आदि कई जन उस बीहड़ वन में पहुँचे। अब तो वहाँ बहुत लोग बसते हैं। पं. नरेन्द्र स्मारक का शिलान्यास तो कभी किया गया था, परन्तु बना-बनाया कुछ भी नहीं। यह देखकर हृदय रो पड़ा। देश की गन्दी राजनीति और वोट बैंक के बलिहारी! दक्षिण का एकमेव क्रान्तिकारी जिसे पिंजरे में बन्द करके मन्नानूर के काले पानी में रखा गया उसके नाम पर वहाँ कुछ भी नहीं। वह पिंजरा कहाँ चला गया? यह बताने वाला भी अब कोई नहीं। आर्यसमाज भी सोया रहा।

वहाँ एक पत्रकार पहुँचा। मेरी पिछली मन्नानूर यात्रा में भी एक पत्रकार पहुँच गया था। इस बार भी पत्रकार ने पूज्य पण्डित जी से संबन्धित मेरे निजी संबन्धों व संस्मरणों को जानने की उत्सुकता दिखाई। हमने सरोवर में कंकर फेंकने जैसा कार्य तो कर दिया। हम सब ने प्रतिवर्ष मन्नानूर

यात्रा निकालने की दक्षिण के आर्यों को सत्प्रेरणा दी। यदि वहाँ कासिम रिज़वी या बहादुरयार जंग ने कुछ दिन बिताये होते तो अब तक वहाँ मस्जिद भी खड़ी हो जाती और कोई स्मारक भी बन जाता। हमारे देवमुनि जी, रमेश मुनि जी, श्री वासुदेव जी आर्य तथा उनकी पत्नी मन्नानूर के उजड़े पर्यटन स्थल पर जाकर गद्‌गद् हो गये।

हैदराबाद के एक पत्रकार ने डॉ. विजयवीर जी से पूज्य पण्डित जी की अब तक की कुछ अप्रकाशित घटनायें व संस्मरण मांगे। वह पत्रकार पण्डित जी पर मेरा ग्रन्थ तो पढ़ ही चुका था। डॉ. विजयवीर जी ने उसे कहा ''नई और अप्रकाशित सामग्री के लिये तो आपको अबोहर जाना पड़ेगा। यहाँ कौन देगा?'' ऐसे महान् और अद्वितीय क्रान्तिवीर पर अब तक एक मेरा ही ग्रन्थ छपा है। सत्ता, सम्पत्ति, पूजा के इस युग में हुतात्माओं और अतीत के क्रान्तिकारियों को कौन पूछता है? हैदराबाद के आर्यों का रक्तरंजित इतिहास गौरवपूर्ण है। वहाँ के आर्यसमाजी वीरों से जुड़े स्थानों पर पर्यटन स्थल न बना सके । आर्यवीर दल तथा फोटोमार्का परिषदें क्या करती हैं?

हैदराबाद सभा ने पुस्तक के विमोचन में अच्छी रुचि दिखाई, परन्तु उपस्थिति के बारे क्या लिखा जावे? क्रान्तिकारी श्री नारायण राव पंवार के परिवार तथा श्री पं. गंगाराम जी के परिवार का सम्मान हमने साथ जोड़ दिया। हैदराबाद शास्त्रार्थ के लिये श्री राहुल जी का भी सम्मान हमने वहीं रख दिया। श्री ठाकुर लक्ष्मणसिंह जी प्रधान सभा, सभा के उपप्रधान जी दिल खोलकर बोले। परोपकारिणी सभा के यात्रियों का भी वहाँ की सभा ने सम्मान किया। श्री नारायण राव जी के संबन्ध में मैंने कई संस्मरण सुनाये। उनकी शूरता-वीरता का ऐतिहासिक महत्त्व बताया। श्री ओम्मुनि ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की दक्षिण की यात्रा का महत्त्व बताया।

दक्षिण से जुड़ी स्वामी श्रद्धानन्द जी की कई हृदयस्पर्शी घटनायें सुनाकर मैंने भी अतीत को वर्तमान करने की प्रबल प्रेरणा दी।

हैदराबाद में एक मुस्लिम परिवार में जन्मा मेधावी जिज्ञासु युवक मुझे मिलने आया। वह सम्पर्क में तो पहले से है, परन्तु किसी कार्य में फँसा होने से अधिक समय नहीं निकाल पाया। उसके मनोभावों तथा सत्य की खोज की उसकी ललक युवकों के लिये एक उदाहरण है। उसे भी ऋषि मेला पर अजमेर आने की प्रबल प्रेरणा दी।

हैदराबाद सभा की एक माँग थी कि उनके विशाल उर्दू पुस्तकालय में क्या-क्या है? किस काम का है? यह उन्हें आकर कभी मैं बताऊँ। उनके आदेश का पालन करते हुए मैं तो वहाँ पहुँच गया। वर्षों से ऐसे ही सड़ रही उन पुस्तकों की धूल-मिट्टी झाड़ने और एक-एक करके मुझे दिखाने को सभा का कोई व्यक्ति मेरे आस-पास नहीं था। श्रीमान् रमेश मुनि जी, देव मुनि जी, श्री राहुल जी, श्री रणवीर जी के साथ पाँचवाँ व्यक्ति मैं था। हम पाँचों दीमक व धूल-मिट्टी झाड़-झाड़ कर पुस्तकों को ठीक करते गये। जो बताना था, मैं बताता गया । उन्हीं पुस्तकों में पं. नरेन्द्र जी लिखित 'दयानन्द आजम' पुस्तक थी।

इस कार्य को निपटाते हुये मैं यह कह आया कि इस आयु में भी आप चाहो तो इस उत्तम पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कर के दे सकता हूँ, कोई प्रकाशित करवाये तो।

पं. नरेन्द्र जी लिखित 'कुरान में तज्जलिये वेद' पुस्तक न मिली। कोई वहाँ समय दे तो हैदराबाद के किसी पुराने पुस्तकालय में मिल सकती है।

भाई श्यामलाल जी शहीद शिरोमणि की बलिदान स्थली बीदर जेल गये। किसी ने वीर शिरोमणि की बलिदान कुटी को दिखाने की पहले से अनुमति नहीं ली थी। खाजा नाम के जेलर ने हठ का परिचय देते हुए हमारी एक न सुनी। माननीय श्री कोठारी जी लोकायुक्त की सहायता से हमने वहाँ के डी.सी. से अनुमति प्राप्त कर ली। सन् २००३ में भाई जी की जन्म शताब्दी पर उस कमरे पर जो प्लेट या पट्टी लगवाई थी, वह उतर चुकी है। दो-तीन वर्ष तो आर्य वहाँ की यात्रा को जाते रहे फिर.....।

कर्नाटक सभा के प्रधान श्री सुभाष जी ने परोपकारी में यात्रा के बारे में पढ़कर मुझसे चलभाष पर बात की। आपने कहा मैं श्रावणी पर्व पर उपदेशकों को लिये हुए समाजों में घूम रहा हूँ। पहले पता होता तो मैं आपका यात्रा में वैसे ही साथ देता जैसा वीर शिवचन्द्र आदि की बलिदान स्थली पर आपकी यात्रा में मैं साथ-साथ रहा।

आपने सभा द्वारा मन्नानूर, बीदर जेल आदि की यात्रा

निकाले जाने पर हार्दिक प्रसन्नता प्रकट करते हुए बधाई भेंट की। आपने यह भी कहा, मैं तो आपके शोलापुर निवासकाल से आपकी इस रुचि व प्रवृत्ति को जानता हूँ। आप कभी कल्याणी, कभी घोड़ेवाड़ी और कभी गुंजोटी की यात्रा पर चल पड़ते थे।

मुझे भी इस बात का खेद रहा कि हम सुभाष जी से समय रहते सम्पर्क न कर सके।

बीदर से लौटकर हैदराबाद से हमने बैंगलोर की ट्रेन पकड़ी। बैंगलोर पहुँचने पर डॉ. राधाकृष्ण जी, श्री राम मोहन जी तथा ऋषि मित्र जी हमें लेने पहुँचे हुए थे। इस यात्रा में हमारे आगे के कार्यक्रमों की डॉ. राधाकृष्ण जी ने जैसी व्यवस्था की, उसकी प्रशंसा के लिये शब्द कहाँ से लायें। बैंगलोर की तीन समाजों में कार्यक्रम हुए। श्रद्धेय पं. सुधाकर चतुर्वेदी जी के दर्शनार्थ दिन में दो-दो तीन-तीन बार भी हमें पहुंचाया गया। गुरुकुल शान्तिधाम भी गये। श्री सत्यव्रत जी, मान्य ब्रह्मदेव जी तथा गुरुकुलवासियों से मिलकर, विचार-विमर्श करके हम झूम उठे। श्री श्रीरविशंकर जी का आश्रम भी देखा। यह मूर्ति रहित है। इसकी यह एक विशेषता है। वेद पाठशाला आदि न देख सके। यज्ञ प्रतिदिन नहीं होता। होता क्या है ? यह कोई स्पष्ट जानकारी न मिल सकी।

श्री डॉ. सतीश शर्मा जी से भी बैंगलोर में मिलन हुआ। डॉ. राधाकृष्ण जी, सत्यव्रत जी की सेवाओं का कोई मूल्याङ्कन तो करे। आपके साहस व धर्मभाव का फल है कि आर्यसमाज श्रद्धानन्द भवन दो बार मरने-मिटने से बचा है।

हम गजानन्द जी के सुपुत्र श्री महेन्द्र जी तथा स्वर्गीय श्री सत्येन्द्र जी आर्य की पत्नी को भी उनके परिवारों में जाकर मिले। श्री श्रुतिप्रिय तथा डॉ. राधाकृष्ण जी ने शोध के एक कार्य में अपूर्व सहयोग किया।

बैंगलोर से डॉ. वर्मा जी ने ही कालीकट यात्रा की व्यवस्था की। वहाँ श्री आचार्य एम. आर. राजेश पहले से ही बहुत ठोस कार्य कर रहे थे। श्री महाशय धर्मपाल जी का सहयोग पाकर आपने सर्वथा एक नई सृष्टि रच दी है। थोड़े से समय में आपने हमारी इस यात्रा के दो सबसे बड़े सफल कार्यक्रम करके अपनी प्रबन्ध-पटुता व धर्मानुराग का परिचय दिया।

मैं कई बार कालीकट की यात्रा कर चुका हूँ। इस बार की यात्रा तो सबसे निराली, आनन्ददायक तथा अविस्मरणीय रहेगी। हमने कहीं भी किसी गुरुकुल व आश्रम में इस सुन्दर रीति से सब सत्संगियों को वेद पढ़ाने की पद्धति कभी देखी ही नहीं थी। आचार्य राजेश जी मुझे मिलकर भावुक हो गये और मैं उनसे मिलकर भावविभोर हो गया। इस लेख में आज उनके कार्य पर, उनके शिष्यों पर और उनकी संस्थाओं पर अधिक नहीं लिखा जायेगा, आगे कभी विस्तार से लिखा जायेगा। आपने पुनः डॉ. अशोक आर्य जी के साथ आने का निमन्त्रण दिया। देश के सबसे बड़े दैनिक पत्र की सर्विस छोड़कर आप वैदिक मिशनरी बन गये। यह आपका अपूर्व त्याग है। आपके पीछे आज जनबल है। युवा शक्ति है। आप गुरुडम को, जड़पूजा को, नास्तिकता और बहुदेवतावाद को उखाड़कर वैदिक युग लायें, हमारी यही कामना है। (शेष फिर कभी)

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३**

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय-व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

जब तक सबकी रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

आर्यजगत् के समाचार

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित गुरुकुल आश्रम जमानी, इटारसी, म.प्र. का वार्षिकोत्सव दि. १९, २०, २१ जनवरी २०१८ को मनाया जा रहा है। यह आश्रम अपने क्षेत्र में आर्यसमाज एवं वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार में सतत प्रयत्नशील है। आप सभी उत्सव में सादर आमन्त्रित हैं। **सम्पर्क- ९१३१९६९१७३**

२. पर्व मनाया- आर्यसमाज बड़ौदा द्वारा दि. ३० सितम्बर १७ को दशहरा पर्व राष्ट्रीय चेतना पर्व के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें संगठन सूक्त, प्रेरणादायी और उत्साहवर्धक नारे, जयघोष और भजनों द्वारा जागृति लाने का प्रयास किया गया।

३. सम्मानित- महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह में विद्वान्, विदुषियों एवं होनहार बच्चों को सम्मानित किया गया।

४. उपनयन संस्कार सम्पन्न- आर्यसमाज तलवंडी कोटा, राज. की उपप्रधाना श्रीमती सुनीता आर्या एवं श्री गुमानसिंह आर्य की सुपुत्री कु. प्रगति आर्या का उपनयन संस्कार, साथ में गुरु विरजानन्द पब्लिक स्कूल द्वारा संचालित गुरुकुल के तीन ब्रह्मचारियों का भी उपनयन (यज्ञोपवीत संस्कार) स्कूल के प्रांगण में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, श्री बिरधीचन्द शास्त्री एवं पं. रामदेव शर्मा जी के ब्रह्मत्व में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

५. वैदिक प्रश्नोत्तरी- आर्यसमाज मन्दिर महर्षि पाणिनि नगर, पूंजला द्वारा विद्यालयों में वेद प्रचार व वैदिक प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसमें दो हजार विद्यार्थी बड़े उत्साह से भाग ले रहे हैं। पुस्तक का नाम वैदिक रश्मि (नैतिक शिक्षा) है, जो लेखक श्री ओमप्रकाश शर्मा, कोटा द्वारा प्रकाशित की गई है ताकि वेद, उपनिषद्, भारतीय संस्कृति एवं महापुरुषों के बारे में बच्चों को जानकारी मिल सके तथा बच्चों को वैदिक संस्कार प्राप्त हो सकें।

६. शौर्य प्रदर्शन- आर्यवीर दल गंगापुर सिटी, राज. द्वारा आयोजित विशाल शौर्य प्रदर्शन ३० सितम्बर २०१७ को मुख्य शाखा स्थल सत्यनारायण जी के मन्दिर में मनाया गया। कार्यक्रम में आर्यवीरों द्वारा सर्वांग-सुन्दर व्यायाम, जूडो-कराटे, आसन, पिरामिड, तलवार, अग्निचक्रम् का प्रदर्शन किया।

७. श्रावणी पर्व मनाया- मॉरिशस के कोरोलिन गाँव में ३० जुलाई २०१७ को श्रावणी पर्व धूमधाम से मनाया गया। श्री सोनालाल नेमधारी द्वारा सपरिवार गायत्री महायज्ञ एवं श्रावणी यज्ञ को सम्पन्न किया गया। यज्ञ पुरोहित पं. सुमनदेव सुखनाथ और पण्डिता प्रेमदा नीलकण्ठ थे।

८. पौधों का वितरण- २ सितम्बर २०१७ के दिन आर्यसमाज वडोदरा, गुजरात द्वारा पंचमहाल जिले के ईश्वरीया गाँव में आम के पौधों का वितरण किया गया। लीला बहन ने यज्ञ की उपयोगिता, लाभ, अनिवार्यता के विषय में लोगों को बताया।

९. पारितोषिक वितरण समारोह - आर्यसमाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर और वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक संस्कृति ज्ञानवर्धिनी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। लगभग एक हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता परिणाम एवं पारितोषिक वितरण समारोह १९ नवम्बर २०१७ को होगा।

१०. वेद प्रचार कार्यक्रम- आर्यसमाज गोमतीनगर, लखनऊ, उ.प्र. द्वारा वेद प्रचार कार्यक्रम दि. १० से १३ सितम्बर २०१७ को विभिन्न स्थलों में यज्ञ पार्क विनय खण्ड-४, महामना मदनमोहन मालवीय विद्यालय, विवेक खण्ड-१, जे.एम.डी. कॉलेज, विवेक खण्ड-२, तथा टी.डी. गर्ल्स कॉलेज, गोमती नगर, लखनऊ में सम्पन्न हुआ।

११. सम्मानित- ऑल इण्डिया जामपुर फैडरेशन, नई दिल्ली द्वारा गुड़गाँव निवासी कन्हैयालाल आर्य को अपने ४८वें वार्षिक अधिवेशन में 'जामपुर रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

१२. यज्ञ सम्पन्न- गोविन्दपुरी, रामनगर, सोडाला, जयपुर, राज. के निवासियों ने उत्साहपूर्वक ३० सित. से २ अक्टू. २०१७ तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन

किया। डॉ. कृष्णपालसिंह की सत्प्रेरणा एवं पूर्ण श्रम से चारों वेदों का पारायण पूर्ण हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. भगवान सहाय विद्यावाचस्पति रहे।

पूर्वीय मण्डल आर्यसमाज जनता कॉलोनी, जयपुर, राज. ने वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन २० से २४ सितम्बर २०१७ तक किया। यज्ञ एवं वेदकथा के ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री सहारनपुर रहे।

उपनगर नींदड़ के आर्यसमाज ने वार्षिकोत्सव की स्वर्ण जयन्ती ६ से ८ अक्टूबर २०१७ को मनाई। इस दौरान प्रतिदिन यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों के सत्र हुए। यज्ञ के आचार्य पं. भगवान सहाय विद्यावाचस्पति रहे। भजनोपदेशक पं. दिनेशदत्त-दिल्ली व प्रवाचक आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय एवं डॉ. रामपाल विद्याभास्कर रहे।

चुनाव समाचार

१३. आर्यसमाज पंचवटी, मालेगांव स्टैण्ड, नासिक, महाराष्ट्र के चुनाव में **प्रधान**- श्री गुलशन कुमार चड्ढा, **मन्त्री**- श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्रीमती सरिता नारंग को चुना गया।

१४. चित्रकूटधाम मण्डल, जनपद हमीरपुर उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- स्वामी सुखदेवानन्द, **मन्त्री**- श्री प्रेमकुमार श्रीवास्तव, **कोषाध्यक्ष**- श्री वेदप्रकाश मिश्रा को चुना गया।

१५. जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जनपद हमीरपुर उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री दिनेशचन्द्र आर्य, **मन्त्री**- श्री लालदीवान यादव, **कोषाध्यक्ष**- श्री रवीन्द्र कुमार शुक्ला को चुना गया।

१६. जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा भरतपुर, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री ओमप्रकाश, **मन्त्री**- श्री सत्यदेव आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री वीरेन्द्र सिंह को चुना गया।

शोक समाचार

१७. आर्यसमाज के प्रसिद्ध आर्यनेता तथा सांसद स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री की बहन **श्रीमती कमला त्यागी** का २ अक्टूबर १७ को ८२ वर्ष की आयु में गंगाराम अस्पताल में निधन हो गया। वे जुझारू और कट्टर आर्यसमाजी एवं समाजसेविका थीं। उत्तर प्रदेश सरकार में वे एम.एल.सी. भी चुनी गई थीं। उनके परिवार में तीनों पुत्र अपनी माता के पदचिह्नों पर चलते हुए समाजसेवा के कार्य में निरन्तर रत रहते हैं। श्रीमती कमला त्यागी का अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से किया गया।

परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

प्रतिक्रिया

आ. सम्पादक जी,

'परोपकारी' के सितम्बर (प्रथम) २०१७ के अंक में पृ. २०-२२ पर 'शिक्षक सामान्य नहीं होता' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। लेख अच्छा बना है, परन्तु उसमें यह वाक्य सही नहीं है- ''सियालकोट और अमृतसर के मध्य रावी नदी के निकट गंगापुर गाँव में सन् १७७९ को सारस्वत ब्राह्मण नारायणदत्त के घर एक पुत्र का जन्म होता है।''

वास्तविकता यह है कि गंगापुर गाँव रावी नदी के निकट नहीं था। रावी नदी वहाँ से बहुत दूर है। गंगापुर के निकट देई नामक एक नदी बहती थी जो आज नहीं के समान है। हाँ, यह कहना उचित होगा कि गुरु विरजानन्द का जन्म अमृतसर तथा जालन्धर के मध्य बह रही नदी सतलुज के निकट गंगापुर नामक गांव में हुआ था। गंगापुर आज लुप्त हो चुका है। वर्तमान करतारपुर गंगापुर गाँव के निकट है, जहाँ विरजानन्द गुरुकुल चलता है।

- इन्द्रजित् देव

टिप्पणी *- इस लेख का स्रोत डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा लिखित पुस्तक 'गुरु विरजानन्द दण्डी-जीवन एवं दर्शन' है। इस पुस्तक के पृष्ठ २ पर लिखा है कि स्वामी विरजानन्द जी ने ही अपने शिष्यों के आग्रह पर बताया था-''सियालकोटाऽमृतसरनामनगरयोरन्तराले इरावती (रावी) सन्निहिते.....ग्रामे.....इदानीं दण्डित्वेन प्रसिद्ध इति''*

यदि इस वाक्य को सही माना जाये तो स्वामी जी स्वयं अपना जन्म स्थान सियालकोट और अमृतसर नगर के बीच बहने वाली इरावती (रावी) नदी के निकट ग्राम में बताते हैं। पुनरपि आपका सुझाव उपयोगी है। धन्यवाद।